पंजीयन संख्या-69904/98
डाक पंजीयन संख्या-एसएसपी/एल०डब्लू०/एन०पी०/318/2020-2022

ओ३म्

श्रृण्वन्तुविंश्वे अमृतस्य पुत्राः

आर्य्य लोक वार्ता

लखनऊ से प्रकाशित वैदिक विचारधारा का हिन्दी मासिक

वर्ष-२२, अंकः-७, जनवरी, सन्-२०२०, सं०-२०७६ वि०, दयानंदाब्द १६५, सृष्टि सं० १,९६,०८,५३,१२०; मूल्य : एक प्रति ५.००रु., वार्षिक सहयोग १००.०० रुपये

उर्वशी पुरूरवा संवाद

ऋग्वेद की मूल कथा से बहुत दूर हैं 'उर्वशी' की लौकिक कथाएँ

अमृत खरे ने किया मूलमंत्रों का यथावत् सरस पद्यानुवाद

वैदिक परिभाषा के अनुसार 'पुरुरवा' का अर्थ है 'मेघ' और 'उर्वशी' का अर्थ है 'विद्युत'। मेघ और विद्युत के संवाद के रूप में ऋग्वेद के दशम मण्डल में आकाश मण्डल के मनोरम दृश्य का आलंकारिक वर्णन किया गया है; जिसे भ्रमवश अनेक कवियों, कथाकारों ने लौकिक कथाओं से जोड़कर अपने कृतित्व का विस्तार किया है। श्री रामधारी सिंह 'दिनकर' का 'उर्वशी' काव्य इसी प्रकार की रचना है। प्रसन्नता की बात है कि गीत-ऋषि श्री अमृत खरे ने पुरुरवा और उर्वशी के संवाद को अपने काव्यानुवाद का विषय बनाकर वेद प्रमियों का उपकार किया है तथा विश्व साहित्य को अपनी इस अनुपम रचना से समृद्ध किया है। 'आर्य लोक वार्ता' में सर्वप्रथम इस रचना को प्रकाशित करते हुए हमें हर्ष और गर्व की अनुभूति हो रही है। -सं.

पुरूरवा उर्वशी संवाद

ऋग्वेद मण्डल 10 सूक्त 95 (कुल मंत्र 18)

● पुरूरवा

री घोर चपल, मन सी चंचल,
दो पल तो रुक उर्वशी जरा!
कुछ तू कह ले कुछ मैं कह लूँ,
मन का मन में क्यों रहे धरा।

यदि हम न अभी इक-दूजे के
अन्तर्मन को छू पायेंगे,
तब कैसे तो आने वाले
दिवसों को सुखी बनायेंगे!

● उर्वशी

छोटा सा जीवन है मेरा,
मुझसे मत कोई आशा कर;
यह प्रेम न बंधने वाला है,
तू भूल मुझे, जा अपने घर!

जो उषा बीत कर जाती है,
कब लौट भला वह पाती है?
गति ही है नियति बनी जिसकी,
कब वायु पकड़ में आती है?

● पुरूरवा

उर्वशी! समझ तू नहीं रही,
कितनी मुझमें व्याकुलता है!
ले कर निषंग से वाण, करूं
संधान, न इतनी क्षमता है।

मैं ऐसा मेघ हुआ, जिसका
गर्जन-तर्जन भी बन्द हुआ,
मुख मोड़ रहे संगी बादल,
आकर्षण सारा मन्द हुआ!

● द्रष्टा _ षि

हे उषा! उर्वशी वर्षा कर
फल, फूल, अन्न उपजाती है,
तब ही तो श्वसुर सूर्य-प्रभु को
यह सब अर्पित कर पाती है।

यदि प्रिय पुरुरवा के संग में
अभिसार-व्यस्त वह जो जाती,
तो कैसे तो जग-जीवन की,
प्रभु रवि की सेवा कर पाती!

● उर्वशी

तू प्रहर-प्रहर कह कर ऐसा
क्यों मुझे प्रताड़ित करता है,
मैं एक प्रियतमा हूँ तेरी,
तू मुझको पूरित करता है।

रे वीर! जान ले, इसीलिये मैं
तेरे संग ही रहती हूँ,
तू मेरे तन का राजा है,
मत व्याकुल हो, मैं कहती हूँ!

● पुरूरवा

उर्वशी! न फुसला तू मुझको,
तुझसे रह-रह डर लगता है;
तेरी सखियों की गाथाएं
सुन मेरा हृदय धड़कता है।

सारी की सारी दामिनियां
उन्मुक्त हुई सुख पाती हैं,
धेनुएं यथा आश्रय तजकर
निर्बन्ध हुई हर्षाती हैं!

● उर्वशी (स्वगत)

जब जन्मा पुरु, छन्द जागे,
जब वह बोला, वाणी बोली,
जब चला, दिव्य शक्तियां चलीं
बन कर के उसकी हमजोली।

● उर्वशी (पुरू से)

प्रिय! अन्तरिक्ष के युद्ध हेतु
देवों ने तुझे बढ़ाया है,
रण छोड़ प्रणय में क्यों अटके
क्यों अपना तेज भुलाया है!

● पुरूरवा

उर्वशी! चलूं जब तक छूने
तेरी किरणें न्यारी-प्यारी,
वह दूर भाग जातीं तब तक
बो कर तन-मन में चिनगारी!

जैसे मृग को चाहती मृगी
भागती व्याघ्र से डर कर के,
ज्यों रथ में जुते हुए घोड़े
भागते चौकड़ी भर-भर के।

● द्रष्टा _ षि

है मरणशील प्रिय पुरु, किन्तु
उर्वशी दिव्य अमरत्व लिये,
फिर भी दोनों हैं प्रेम पगे,
दोनों ही अमृत पान किये।

जब पुरु करे अभिसार,
रतिमयी किरणें रूप छुपाती हैं,
क्रीड़ारत अश्वों पर जैसे
आंखें ही ठहर न पाती हैं!

● पुरूरवा (स्वगत)

उर्वशी डोलती इधर-उधर
गिरती-पड़ती, कब थकती है,
हो पूर्णकाम जीवन अपना,
बस यही कामना रखती है।

बेटा जल परम यशस्वी है,
कितनी सुन्दर सन्तति अपनी,
जीवों को देता दीर्घ आयु
मानव को सुख की छांव घनी।

● उर्वशी

हे पुरुरवा! तू है समर्थ
धरती की रक्षा करने में,
भर दे मुझमें भी ओज यही,
संकोच न हो संग चलने में।

सब दिन हूँ प्राप्तवती तेरी,
अधिकार प्यार का अपना है;
क्यों सुनता बात नहीं मेरी,
आखिर तेरा क्या कहना है?

● पुरूरवा

कह पहले, कब तेरा जाया
बेटा जल मुझको चाहेगा?
जब मुझको पिता बुलायेगा,
आंसू तो नहीं बहायेगा?

डर मत, है कौन पुत्र, जो कि
मां और पिता को अलग करे?
वह तेरे श्वसुर सूर्य-प्रभु के
घर खेले औ' उल्लास भरे!

● उर्वशी

मैं कहती हूँ, तेरे प्रति तो
जल अश्रु बहाता रहता है;
पाकर तुझको, क्रन्दन करता
रो देगा, ऐसा लगता है।

तेरा अपत्य, जो संग मेरे,
मैं तेरे पास भेजती हूँ।
उसको लेकर तू जा घर को,
पर मूढ़! न मैं आ सकती हूँ!

● पुरूरवा

तेरा यह क्रीड़रत प्रेमी
बस अभी धरा पर गिर जाये,
या दूर देश जा छुप जाये,
या मर कर परममुक्ति पाये।

पृथ्वी की गोद मिले इसको,
निद्रा देवी शिर थपकाएं,
अथवा इसको, इस पल को ही
गतिशील भेड़िए खा जायें।

● उर्वशी

रे पुरुरवा! मत गिर, मत मर,
तुझको न भेड़िये ही खायें
क्यों अशुभ घटे, क्यों कर मन में
ये बुरी-बुरी बातें आयें!

वस्तुतः मैत्री नारी से, सच
में न मैत्री बन पाती,
जंगली भेड़ियों सी यह भी
तन, मन, जीवन, सब खा जाती!

फिर मैं नारी भी नहीं, पुंज हूँ
दीपित विद्युत किरणों का,
बन्धन स्वीकारूं तो कैसे,
जो बने चार ही ऋतुओं का।

यदि मैं नारी ही होती तो
खाती, पीती, सोती, जगती,
मैं तो थोड़ा घृत पी कर ही
हो तृप्त विचरती हूँ रहती!

● पुरूरवा

तू जल की निर्मात्री है, तो
मैं जल को वश में करता हूँ;
तेरा-मेरा नाता क्या है,
समझे, तो समझा सकता हूँ!

है मेरा हृदय तप्त होता,
अब चुप हो जा, बातें न बना;
शुभ कर्मों वाला तेरा ये,
तेरा बन कर ही रहे सदा!

● पुरूरवा

तू सदा कहाँ रहने वाला,
तू यहाँ मृत्यु का बन्धक है;
जन्मे को मरना ही होता,
तू श्वास-श्वास का याचक है।

जितनी आसक्ति रखी मुझमें,
जो उतनी भक्ति रखे प्रभु में,
तो निश्चय स्वर्ग मिले तुझको,
तू हो कर मुक्त रमे प्रभु में!

सम्पादकीय

सबसे बढ़कर कौन?

समय की शिलाओं पर अपने अमिट हस्ताक्षर करके वर्ष २०१९ विदा हो चुका है। 'कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः' (अथर्ववेद-१९.५.३.१) के संदर्भ में २०१९ ने समय रूपी घोड़े की वल्गाओं को थामने का उपक्रम किया है। कुल मिलाकर २०१९ में पांच घटनाएं ऐसी घटित हुई हैं- जो इतिहास में स्थायी महत्त्व रखती हैं-

१.धारा ३७० की परिसमाप्ति २.रामजन्मभूमि विवाद निर्णीत ३.नागरिकता कानून ४.श्रीमती नुसरत जहाँ (टी.एम.सी.की नवनिर्वाचित सांसद का शपथ ग्रहण) ५.प्रधानमंत्री द्वारा प्रयागराज कुम्भ में स्वच्छताकर्मियों का पद-प्रक्षालन। इन पाँचों घटनाओं में सर्वाधिक महत्त्व किसका है-यह जानना बेहद जरूरी है!

धारा ३७० की परिसमाप्ति के परिणामस्वरूप निश्चय ही कश्मीर भारत का अविभाज्य अंग बन गया और लौहपुरुष सरदार वल्लभभाई पटेल की उपेक्षा करके तत्कालीन प्रधानमंत्री पं.जवाहरलाल नेहरू द्वारा कश्मीर के मसले को लेकर जो पर्वताकार भूलें हुई थीं, उनका परिशोधन वर्तमान प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी द्वारा किया गया। कश्मीर भारत का अभिन्न अंग है, यह कथन सत्य-सार्थक बना। डॉ.श्यामा प्रसाद मुखर्जी का बलिदान रंग लाया और जो कार्य अब तक असंभव माना जाता रहा था, उसे संभव करके मोदी जी ने दिखा दिया। भारत के मानचित्र को दुरुस्त करने हेतु मोदी जी का यह कदम 'महत्कार्य' ही माना जायगा।

२०१९ में जो दूसरा महत्कार्य सम्पन्न हुआ; वह था श्रीराम जन्मभूमि मंदिर के निर्माण का पथ प्रशस्त होना। आजादी प्राप्ति के साथ ही उठने वाली यह मांग जनान्दोलन बन चुकी थी और इसके मार्ग में लगातार बाधाएँ बनी हुई थीं। सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के मार्ग में भी निहित स्वार्थधारी राजनेताओं ने अनेक बाधाएँ खड़ी कीं। यहाँ तक कि न्याय मंदिर को अव्यस्थित करने का दाँव चलने में भी नहीं चूके। कुछ मध्यस्थता करने वालों को आगे करके भी सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय के रास्ते में रुकावटें डाली गईं। सारी विपथगामी कोशिशों और तिकड़मों को दर किनार करते हुए अन्ततः रामजन्मभूमि सम्बन्धी ऐतिहासिक निर्णय २०१९ में सुना दिया गया। यहाँ भी प्रशासनिक व्यवस्था इतनी चाक चौबन्द रही- एक भी साम्प्रदायिक वारदात नहीं होने पाई। (देखिए-'आर्य लोक वार्ता' का अक्टूबर-नवम्बर २०१९ अंक-'रामलला को मिल गई जन्मभूमि सुखमूल')

२०१९ का तीसरा महत्कार्य है- नागरिकता संशोधन कानून का संसद के दोनों सदनों से पारित होना। राष्ट्रीय एकता, सुरक्षा, सुख समृद्धि के साधन स्वरूप इस कानून से उन लोगों के दिलों पर साँप लोटना सर्वथा स्वाभाविक है, जो इस आर्य राष्ट्र को स्थिर और अखण्ड नहीं देखना चाहते। दिशाहीन, लक्ष्यहीन, निकम्मी सरकारों के चलते देश की दशा इतनी जर्जर और भयावह हो गई थी, कि उसका अनुमान लगाना भी कठिन है। आज जो लोग 'आज़ादी आज़ादी' के नारे लगा रहे हैं, वे पूर्ववर्ती सरकारों की लापरवाही की उपज हैं। ये सभी तत्व विदेश ताकतों- खासकर पाकिस्तान के मददगार हैं। आज नागरिकता कानून से उनकी रूहें काँप रही हैं। नागरिकता कानून भारत में व्याप्त प्रदूषण को दूर कर उसे शुद्ध स्वास्थ्यवर्द्धक शान्तिमूलक वातावरण प्रदान करने की दिशा में उठाया गया कदम है।

चतुर्थ घटना है- संसद में शपथग्रहण समारोह के प्रथम दिवस तृणमूल कांग्रेस की नवनिर्वाचित सदस्या श्रीमती नुसरत जहाँ ने हिन्दू सौभाग्यवती नारी का परिधान धारण करके सभी को चौंका दिया और लोकसभा के नीरस वातावरण को सरस और भावपूर्ण बना दिया- माथे पर बिन्दी, माँग में सिन्दूर, हाथों में चूड़ियाँ, गले में मंगलसूत्र, आँचल से सिर को ढके हुए राष्ट्र भाषा में शपथ ग्रहण किया और कहा- मैं समावेशी भारतीय संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती हूँ। प्रथम बार लोकसभा में इस प्रकार का मोहक और रंजनकारी अवसर आया जो महिला समाज के लिए एक अनुकरणीय आचरण का आदर्श दे गया। 'आर्य लोक वार्ता' का अगस्त २०१९ अंक देखें, जिसमें नुसरत जहाँ के चित्र के साथ कतिपय काव्यपंक्तियां अंकित हैं।

धारा ३७० की परिसमाप्ति, रामजन्मभूमि आन्दोलन की सफलता, नागरिकता संशोधन कानून तथा समावेशी संस्कृति की प्रतिनिधि नुसरत जहाँ- इन चारों घटनाओं से भी बड़ी मेरी दृष्टि में २०१९ की पांचवीं घटना है- प्रयागराज कुम्भ की सफल समापन की अमृतवेला में महान् भारत के प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र दामोदर मोदी द्वारा स्वच्छताकर्मियों का पद-प्रक्षालन। मोदी जी ने इन स्वच्छताकर्मियों के चरणों में बैठकर उनका पद प्रक्षालन किया- तौलिये से उनके पैरों को साफ किया। यह वही स्वच्छताकर्मी थे, जिन्हें भारतीय समाज ने सदियों से महाअपवित्र तथा अस्पृश्य उपेक्षित माना था। स्वच्छता प्रदान करने वाले युग युग से शोषित, वंचित, उपेक्षित, उत्पीड़ित, दुःखी, दरिद्र, दीन हीन समाज के इन प्रतिनिधियों के अपने हाथों से स्वयं भारत राष्ट्र के महान प्रधान मंत्री (सर्वोच्च शासक) को पग-प्रक्षालन करते देखकर एक भिन्न प्रसंग में लिखी गई नरोत्तमदास की इन पंक्तियों का स्मरण हो आता है:

पानी परात को हाथ छुयो नहिं,
नैनन के जल सों पग धोये।।

सुदामा जैसे दीनदुखी के पैर धोने वाले योगेश्वर कृष्ण के साथ यदि आधुनिक भारत के निर्माता प्रधानमंत्री नरेन्द्र दामोदर दास की तुलना की जाती है तो इसमें अत्युक्ति ही क्या है? (कृपया देखें-आर्य लोक वार्ता जून २०१९ अंक)

वेदप्र. श. शास्त्री

सत्यार्थ प्रकाश वार्ता-२०१

युग प्रवर्त्तक महर्षि दयानन्द सरस्वती के अमरग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' के धारावाहिक स्वाध्याय के क्रम में नवम समुल्लास का अंश

त्रिगुण

देवत्वं सात्त्विका यान्ति मनुष्यत्वञ्च राजसाः। तिर्यक्त्वं तामसा नित्यमित्येषा त्रिविधा गतिः।।

जो मनुष्य सात्त्विक हैं वे देव अर्थात् विद्वान्, जो रजोगुणी होते हैं वे मध्यम और जो तमोगुणयुक्त होते हैं वे नीच गति को प्राप्त होते हैं।।1।।

स्थावराः कृमिकीटाश्च मत्स्याः सर्पाश्च कच्छपाः। पशवश्च मृगाश्चैव जघन्या तामसी गतिः।।

जो अत्यन्त तमोगुणी हैं वे स्थावर वृक्षादि, कृमि, कीट, मत्स्य, सर्प, कच्छप पशु और मृग के जन्म को प्राप्त होते हैं।।2।।

हस्तिनश्च तुरङ्गाश्च शूद्रा म्लेच्छाश्च गर्हिताः। सिंहा व्याघ्रा वराहाश्च मध्यमा तामसी गतिः।।

जो मध्यम तमोगुणी हैं वे हाथी, घोड़ा, शूद्र, म्लेच्छ निन्दित कर्म करने हारे सिंह, व्याघ्र, वराह अर्थात् सूकर के जन्म को प्राप्त होते हैं।।3।।

चारणाश्च सुपर्णाश्च पुरुषाश्चैव दाम्भिकाः। रक्षांसि च पिशाचाश्च तामसीषूत्तमा गतिः।।

जो उत्तम तमोगुणी हैं वे चारण (जो कि कवित्त दोहा आदि बनाकर मनुष्यों की प्रशंसा करते हैं) सुन्दर पक्षी, दाम्भिक पुरुष अर्थात् अपने मुख से अपनी प्रशंसा करने हारे, राक्षस जो हिंसक, पिशाच जो अनाचारी अर्थात् मद्यादि के आहारकर्त्ता और मलिन रहते हैं; वह उत्तम तमोगुण के कर्म का फल है।।4।।

झल्ला मल्ला नटाश्चैव पुरुषाः शस्त्रवृत्तयः। द्यूतपानप्रसक्ताश्च जघन्या राजसी गतिः।।

जो अत्यन्त रजोगुणी हैं वे झल्ला अर्थात् तलवार आदि से मारने वा कुदार आदि से खोदनेहारे, मल्ला अर्थात् नौका आदि के चलाने वाले, पट जो

बांस आदि पर कला कूदना चढ़ना उतरना आदि करते हैं, शस्त्रधारी भृत्य और मद्य पीने में आसक्त हों; ऐसे जन्म नीच रजोगुण का फल है।।5।।

राजानः क्षत्रियाश्चैव राज्ञां चैव पुरोहिताः। वादयुद्धप्रधानाश्च मध्यमा राजसी गतिः।।

जो मध्यम रजोगुणी होते हैं वे राजा क्षत्रियवर्णस्थ राजाओं के पुरोहित, वाद-विवाद करने वाले, दूत, प्राड्विवाक (वकील बारिष्टर), युद्ध विभाग के अध्यक्ष के जन्म पाते हैं।।6।।

गन्धर्वा गुह्यका यक्षा विबुधानुचराश्च ये। तथैवाप्सरसः सर्वा राजसीषूत्तमा गतिः।।

जो उत्तम रजोगुणी हैं वे गन्धर्व (गाने वाले) गुह्यक (वादित्र बजानेहारे) यक्ष (धनाढ्य) विद्वानों के सेवक और अप्सरा अर्थात् जो उत्तम रूप वाली स्त्री का जन्म पाते हैं।।7।।

तापसा यतयो विप्रा ये च वैमानिका गणाः। नक्षत्राणि च दैत्याश्च प्रथमा सात्त्विकी गतिः।।

जो तपस्वी, यति, संन्यासी, वेदपाठी, विमान के चलाने वाले, ज्योतिषी और दैत्य अर्थात् देहपोषक मनुष्य होते हैं उनको प्रथम सत्त्वगुण के कर्म का फल जानो।।8।।

यज्वान ऋषयो देवा वेदा ज्योतींषि वत्सराः। पितरश्चैव साध्याश्च द्वितीया सात्त्विकी गतिः।।

जो मध्यम सत्त्वगुण युक्त होकर कर्म करते हैं वे जीव यज्ञकर्त्ता, वेदार्थवित्, विद्वान्, वेद, विद्युत आदि काल विद्या के ज्ञाता, रक्षक, ज्ञानी और (साध्य) कार्यसिद्धि के लिये सेवन करने योग्य अध्यापक का जन्म लेते हैं।।9।।

(क्रमशः)

वेदांजलि

क्रान्तदर्शी ही कालरूपी घोड़े पर चढ़ सकते हैं

□पं.शिव कुमार शास्त्री
पूर्व संसद सदस्य

कालो अश्वो वहति सप्तरश्मिः सहस्राक्षो अजरो भूरिरेताः।
तमा रोहन्ति कवयो विपश्चितस्तस्य चक्रा भुवनानि विश्वा।।
—अथर्व. 19/53/1

शब्दार्थ–

(सप्तरश्मिः) सात रस्सियों वाला **(सहस्राक्षः)** हजारों धुरों को चलाने वाला **(अजरः)** कभी भी जीर्ण, बुड्ढा न होनेवाला **(भूरिरेताः)** महाबली **(कालः अश्वः)** समयरूपी घोड़ा **(वहति)** चल रहा है- संसार-रथ को खींच रहा है। **(विश्वा भुवनानि)** सब उत्पन्न वस्तुएँ, सब भुवन **(तस्य)** उसके **(चक्राः)** उसके द्वारा चक्रवत् घूम रहे हैं। **(तम्)** उस घोड़े पर **(विपश्चितः)** ज्ञानी और **(कवयः)** क्रान्तदर्शी लोग ही **(आरोहन्ति)** सवार होते हैं।

व्याख्या–

मंत्र में मुख्य रूप से दो बातें कही गई हैं- पहली यह कि सम्पूर्ण भुवनचक्र को घुमानेवाला महाबली और कभी वृद्ध होकर मन्दगति न होनेवाला समयरूपी घोड़ा पूरे वेग से दौड़ रहा है। दूसरी यह कि इस महाबली और वेगवान् कालरूपी घोड़े पर ज्ञानी और दूरदर्शी लोग ही सवार होकर अपने लक्ष्य तक पहुँचते हैं, अल्पसामर्थ्य और अदूरदर्शी नहीं। इस मंत्र में सफलतापूर्वक जीवन का रहस्य बताया गया है। जो संसार में जातियों और राष्ट्रों के उत्थान और पतन के लम्बे इतिहास पर गुण-दोषों का विवेचन करके चलते हैं, वहीं इस घोड़े पर सवार होते हैं। ऐसे लोग वर्तमान में सुख-सुविधा प्राप्त करते हुए अपने भविष्य का निर्माण करते हैं यही बात प्रसिद्ध इतिहासकार यदुनाथ सरकार ने इन शब्दों में लिखी है-

"Nations live on their past, in their present, for their future."

'जातियाँ भूत के आधार पर वर्तमान में भविष्य के लिए जीती हैं।'

वेद ने कालरूपी घोड़े के योग्य सवार बनने के लिए मनुष्य को सर्वप्रथम ज्ञानी बनने का-**'भानुमन्विहि'** (ऋ.) परामर्श दिया है, संयम और तप का उपदेश दिया है-**'ब्रह्मचर्येण तपसा देवा मृत्युमुपाघ्नत'** (अथर्व.), **'तेन त्यक्तेन भुंजीथाः'** (यजु.) कहकर त्यागभाव से संसार को भोगने का उपदेश दिया है। ये सभी उपदेश मनुष्य को सोच समझ कर मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए दिये गए हैं। समाज में इस वायुमण्डल के तैयार होने पर वही दृश्य उपस्थित हो जाएगा, जिसकी झाँकी महर्षि वाल्मीकि ने रामायण में अयोध्या का वर्णन करते हुए की है।

राम ने राजतिलक की तैयारी होते होते अप्रत्याशित रूप से उपस्थित वनवास के प्रस्ताव को सहज भाव से अंगीकार किया। इसके मार्ग में बाधक बननेवाले लक्ष्मण को भी बड़े चातुर्य से शान्त किया। इन सभी आचरणों से राम की दूरदर्शिता और व्यवहार-कौशल का पता चलता है।

उधर ननसाल लौटने पर भरत ने परिस्थिति का अध्ययन करके अपने राज्याधिकार के प्रस्ताव को ठुकरा दिया और राम को वापस लाने के लिए मंत्रि- मण्डल, अयोध्या के चुनिंदा लोगों और तीनों माताओं को साथ लेकर प्रस्थान किया।

राम ने अनेक युक्ति-प्रतियुक्तियों के पश्चात् कहा कि जो पिता अपने वचन का पालन करने के लिए इस संसार से चला गया, उसका पुत्र मैं यदि 14 वर्ष बिना पूरे किये लौट जाऊँ तो **'कथमन्ये करिष्यन्ति पुत्रेभ्यः पुत्रिणः स्पृहाम्'**-तो संसार के पिता अपने पुत्रों से यह आशा कैसे कर सकेंगे कि उनके पुत्र आगे संसार में उनकी लीक पर चलकर उनके प्रण निभाएँ?

इस सारे कथा-प्रसंग के उद्धृत करने का यही उद्देश्य है कि भरत और राम दोनो का दृष्टिकोण दूरदर्शिता और औदार्य से पूर्ण था। परिणामस्वरूप कुत्सित स्वार्थ और संकीर्ण दृष्टि से जो कटुता उत्पन्न हुई थी, उसका भी पर्यवसान स्नेह और आत्मीयता में हो गया। भारत के इतिहास में भरत और राम ने परम ख्याति अर्जित की और हमारे मानसभवनों में वे आज भी जीवित-जागृत हैं, अमर हैं। इसी को कहते हैं समयरूपी घोड़े पर सवारी करना।

कृष्ण ने अपनी प्रबल नीति से अपने चिर-वैरी और अतिबली शत्रु को उसके घर में घुसकर बिना सैनिक-क्षति किये हुए समाप्त कर दिया। युधिष्ठिर के राजसूय यज्ञ में सहयोग के लिए सैकड़ों राजा जुटा दिये। इस सूझबूझ के साथ संसार में चलने को ही कहते हैं-समयरूपी घोड़े पर सवारी करना।

इसीलिए महर्षि दयानन्द ने जो प्रशस्ति पत्र कृष्ण को दिया वह किसी दूसरे को प्राप्त न हो सका। महर्षि ने लिखा है कि-'महाभारत में वर्णित कृष्ण के चरित्र को देखने से विदित होता है कि इस महापुरुष ने यावज्जीवन कोई पाप नहीं किया।'

अतएव मंत्र में कहा गया है कि- **'तमारोहन्ति कवयो विपश्चितः'**-इस कालरूपी अश्व पर सवारी करने का अधिकार विद्वान् और क्रान्तदर्शियों को ही है।

अतः प्रत्येक विचारशील व्यक्ति को सावधान होकर दूरदर्शिता से देश के गौरव और सम्मान की सुरक्षा के लिए तुच्छ स्वार्थों की आहुति देनी चाहिए और अच्छे संयमी और तपस्वी व्यक्तियों के हाथ में ही देश का भविष्य सौंपना चाहिए। अन्यथा जो परिणाम होगा, वह एक उर्दू शायर के शब्दों में पढ़िये-

मैं ही रुका न वक़्त की रफ़्तार देखकर,
कहता रहा वो मुझसे ख़बरदार! देखकर।
यूँ पढ़के उसने एक तरफ़ रख दिया मुझे,
जिस तरह फेंक दे कोई अख़बार देखकर।

('श्रुति सौरभ' से साभार)

दयानन्द चरितामृतम्

&MkW-xksknUkkekZ&

(प्रथमः सर्गः)

छन्द २२-२४

भजस्व गंगाधरमीश्वरं शिवम्,
उमापतिं भूतपतिं पिनाकिनम्।
तथाष्टमूर्तिं स्मरनाशनं भवम्,
त्रिलोचनं भीममथो महानटम्।।

(और कहा कि)-तुम गंगा को धारण करने, सबके स्वामी, उमा (पार्वती) के पति, समस्त प्राणियों के स्वामी, पिनाक नामक धनुष को धारण करने वाले, आठ रूपों वाले, कामदेव को भस्म करने वाले, त्रिनेत्रधारी (दुष्टों के लिए) भयंकर रूप वाले तथा (ब्रह्माण्डरूपी नाटक के) महान नट् भगवान् शिव का भजन करो।

स कामयामास च मे सुतो मुदा,
भवेत् शिवाराधनसक्तमानसः।
जायेद्यथाऽऽस्तिक्यपरम्परा शुभा,
सदा प्रवृत्ता सुखदा कुले मम।।

उन्होंने यह कामना की कि-"मेरा पुत्र प्रसन्नतापूर्वक शिव की आराधना में आसक्त मन वाला हो, जिससे कि मेरे कुल में सदा आस्तिकता की शुभ एवं सुखद परम्परा प्रवृत्त हो।"

अतो निनायात्मजमात्मनं प्रियम्,
शिवोत्सवे धर्मसमागमे तथा।
मदन्ति ते पितृवरास्तु स्वर्गताः
सुसंस्कृतां ये जनयन्ति संततिम्।।

इसलिए (कर्षणजी) अपने प्रिय पुत्र (मूलशंकर) को शिव के उत्सव में तथा धर्म के आयोजनों में ले जाते थे। वे श्रेष्ठ पिता स्वर्ग में आनन्दित होते हैं जो अपनी सन्तान को उत्तम संस्कारयुक्त बनाते हैं।

('दयानन्द चरितामृतम्' से साभार, क्रमशः)

-साहिबाबाद, गाजियाबाद-२०१००५

सत्संग

जिज्ञासा और समाधान

जिज्ञासा :

'आर्य लोक वार्ता प्रकाशन की पुस्तक 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' में सन्ध्योपासना का वर्णन शुरू में क्यों नहीं किया गया है? ज्यादातर पुस्तकों में सन्ध्या पहले वर्णित है, उसके पश्चात् यज्ञ (अग्निहोत्र) का वर्णन किया गया है।' उपर्युक्त प्रश्न अम्बेडकरनगर जनपद में मुझसे एक आर्य सज्जन ने किया, जब मैं उन्हें 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' की विशेषताओं से अवगत करा रहा था। कृपया समाधान कर दें।

-श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, 15 बहादुर पुर, लखनऊ

समाधान :

क्रान्तदर्शी ऋषियों की तीन प्रधान रचनाओं को 'प्रस्थानत्रयी' कहा जाता है। 'सत्यार्थ प्रकाश', 'ऋग्वेदादिभाष्यभूमिका' और 'संस्कार-विधि' महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज की प्रस्थानत्रयी है। इनमें 'संस्कार-विधि' विश्व में संस्कारों को लेकर सर्वप्रमुख शोधपूर्ण ग्रंथ है; जिससे अपने अपने ढंग से देश विदेश के विद्वान्, पुरोहित और आचार्य आज लाभान्वित हो रहे हैं।

'वैदिक यज्ञ प्रकाश' की रचना 'संस्कार-विधि' में महर्षि द्वारा प्रतिपादित यज्ञ-विधान के अनुरूप की गई है। क्योंकि आज अनेक यज्ञ हवन की किताबें अपने अपने ढंग से प्रकाशित हो रही हैं। इसलिए यह आवश्यक है कि 'संस्कार विधि' में महर्षि द्वारा निर्धारित यज्ञ की प्रक्रियाओं से आर्यजनों को परिचित कराया जाय। 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' सम्प्रति एकमात्र ऐसी पुस्तक है जो कि महर्षि द्वारा निर्मित संविधान के अनुरूप परिश्रमपूर्वक तैयार की गई है। अब तक पांच संस्करण प्रकाश में आ चुके हैं। अस्तु, जो लोग कहते हैं कि 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' में संध्या पहले क्यों नहीं है, उन्हें यह 'संस्कार-विधि' में देखना चाहिए कि संध्या कहाँ पर है? 'संस्कार-विधि' में महर्षि ने 'संध्या' का विधान गृहाश्रम प्रकरण में किया है; जबकि यज्ञ के विधान से ग्रंथ का प्रारंभ हुआ है। अतः जिन्हें महर्षि दयानन्द और आर्य समाज से सच्चा अनुराग है, वे 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' कर स्वागत करते हैं। 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' की मौलिकता उनके अनुक्रम में है। इस हेतु 'वैदिक यज्ञ प्रकाश' की प्रस्तावना 'यज्ञ से पूर्व' तथा 'वैदिक यज्ञ प्रकाश का वैशिष्ट्य' शीर्षक प्रख्यात आर्य विदुषी डॉ.शान्तिदेव बाला का लेख ध्यानपूर्वक पढ़ना चाहिए। आपकी समस्त शंकाओं का समाधान उक्त दोनों लेखों को पढ़ने से अपने आप ही हो जायगा।

-सम्पादक

स्मृति-विशेष

महात्मा आर्यभिक्षु

(स्वामी आत्मबोध सरस्वती)

-रमेश चन्द्र मित्तल

महर्षि दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त महात्मा आर्य भिक्षु जी का जन्म ३१ जनवरी १९२३ को एक धनाढ्य वैश्य परिवार में हुआ था। आपके पिता लाला पूर्णमासी प्रसाद जी गुप्त, मुगलसराय (वाराणसी) के एक रईस एवं बैंकर थे। आपकी माता जी का नाम राजकुमारी गुप्ता था। इनके बचपन का नाम रामजी प्रसाद गुप्त था। इनके माता-पिता कट्टर मूर्तिपूजक व पौराणिक विचार धारा के थे। आपके परिवार में बाबा विश्वनाथ की पूजा-अर्चना व रामायण का पाठ प्रतिदिन होता था, जिससे बालक रामजी को तुलसी कृत रामायण सम्पूर्ण कण्ठस्थ हो गई थी। रामायण की चौपाइयां व दोहे महात्मा जी अपने प्रवचनों में यदा-कदा सुनाया करते थे। इनकी प्रारम्भिक शिक्षा स्थानीय स्कूलों में होती रही। वर्ष १९४१ में जब आप ग्यारहवीं कक्षा के छात्र थे तो अकस्मात् आपके हाथ महर्षि के अमर ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' की एक प्रति लग गई, जिसको अपने आद्योपान्त पढ़ा। एक बार नहीं, कई-कई बार पढ़ा। उसका इनके मन व हृदय पर इतना गहरा प्रभाव पड़ा कि इन्होंने अपने पिताजी की इच्छा के विरुद्ध मुगलसराय आर्य समाज की सदस्यता ग्रहण कर ली। स्कूली पढ़ाई के साथ-साथ सत्यार्थ प्रकाश का पठन-पाठन (स्वाध्याय) सतत चलता रहा। सन् १९४२ की क्रान्ति (अंग्रेजों भारत छोड़ो आन्दोलन) में आपने बढ़-चढ़ कर भाग लिया, जिससे जेल यात्रा करनी पड़ी। करावास में आपने सत्यार्थ प्रकाश का स्वाध्याय जारी रखा। जेल से छूटने के बाद आपने अपनी शिक्षा का क्रम जारी रखा तथा इण्टरमीडिएट की परीक्षा उत्तीर्ण कर वाराणसी के हरिश्चन्द्र डिग्री कालेज में बी.ए. में प्रवेश लिया। पूर्ण निष्ठा व लगन के साथ पढ़ते हुए दो वर्ष बाद आपको स्नातक की उपाधि मिली।

स्नातक की उपाधि प्राप्त करने के उपरान्त अपने पिता के साथ उनके व्यवसाय में हाथ बंटाने लगे तथा अपनी प्रखर बुद्धि से व्यवसाय को बढ़ाया। १ अगस्त १९४५ को साढ़े बाईस वर्ष की आयु में आपका विवाह जौनपुर निवासी मास्टर हरिनारायण जी की सुपुत्री लीलावती गुप्ता के साथ हुआ। लीलावती जी बहुत ही सहनशील व पतिव्रता सद्गृहणी थीं। केवल कक्षा चार तक पढ़ी थीं, परन्तु अपने सुयोग्य पतिदेव के सान्निध्य में रहते हुए आपने 'सत्यार्थ विशारद' की परीक्षा उत्तीर्ण की। वर्ष १९५० में श्री रामजी प्रसाद गुप्त मुगलसराय आर्य समाज के प्रधान बने। वर्ष १९५२ में जिला सभा के प्रधान मनोनीत किये गये तथा वर्ष १९५४ में आप आर्य प्रतिनिधि सभा उ.प्र. के कोषाध्यक्ष बने। आर्य समाज के प्रचार व प्रसार तथा युगप्रवर्तक महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के मिशन को आगे बढ़ाने हेतु आप अपने जमे-जमाये व्यापार तथा विपुल सम्पत्ति को त्यागकर, 'सत्यार्थ प्रकाश' के सहारे वेद प्रचार में लग गये। सत्यार्थ प्रकाश के प्रत्येक समुल्लास को अपने आत्मसात् कण्ठस्थ कर लिया।

संस्कार-विधि में उल्लिखित आश्रम व्यवस्था के अनुपालन में ५० वर्ष की आयु होने पर दिनांक ३१ जनवरी १९७३ को वानप्रस्थ की दीक्षा ग्रहण की तथा रामजी प्रसाद गुप्त से 'आर्य भिक्षु' हो गये तथा माता लीलावती जी के साथ स्थायी रूप से आर्य विरक्त (वानप्रस्थ-संन्यास) आश्रम, ज्वालापुर में रहने लगे। सम्पूर्ण आर्य जगत में आपकी ख्याति महात्मा आर्य भिक्षु के नाम से हुई। वानप्रस्थ में आने पर आपने अपनी मुगलसराय की पैतृक सम्पत्ति को 'माता लीलावती परोपकारिणी न्यास' में परिवर्तित कर नामांकित कर दिया था। उसकी समस्त आय तथा वेद प्रचार के माध्यम से प्राप्त दक्षिणा-राशि को अपने न्यास के खाते में जमा कर देते थे। न्यास के माध्यम से ही आप विभिन्न संस्थाओं के सहायतार्थ एवं उद्धारार्थ दान देते रहते थे। हर साल अपने जन्म दिवस ३१ जनवरी को किसी न किसी विद्वान् व विदुषी को सम्मानित करना अपना परम कर्तव्य व दायित्व समझते थे। न्यास के माध्यम से इस पुनीत कार्य को मृत्यु पर्यन्त निभाते रहे। वह कहा करते थे कि यह सब ऋषि का पैसा है, मेरा अपना व्यक्तिगत कुछ नहीं है, मैं तो इसका न्यासी (ट्रस्टी) हूँ, अतः यह सब ऋषि के कार्यों को आगे बढ़ाने में ही व्यय होना चाहिए। उन्होंने जगह-जगह सफेद पत्थर (संगमरमर) पर आर्य समाज के नियम तथा उद्देश्य खुदवाकर संस्थाओं के परिसरों में लगवाये। टंकारा (गुजरात) में आर्य समाज की स्थापना, अजमेर (राजस्थान) में मिनाय कोठी में एक यज्ञशाला तथा एक कुटिया (कक्ष) का निर्माण कराया तथा होमियोपैथी डिस्पेंसरी अपने पैसों से खुलवायी। इनके अतिरिक्त अजमेर में परोपकारिणी सभा के अन्तर्गत काफी कार्य कराये। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा में स्थिर निधि की वेद प्रचारार्थ व्यवस्था की। वानप्रस्थ आश्रम में एक सुन्दर कुटिया संन्यासियों व विद्वानों के ठहरने के लिये बनवाई। आप आश्रम के कई बार प्रधान रहे, सर्वसम्मतिसे। अपने प्रधान काल में ही आपने आश्रमवासियों के लिए पंजाब नेशलन बैंक, पोस्ट आफिस तथा राधिका देवी ट्रस्ट से आर्थिक सहयोग प्राप्त कर होम्योपैथिक डिस्पेंसरी खुलवाई। वैदिक मोहन आश्रम भूपतवाला तथा व्यास आश्रम खड़खड़ी में भी आपने संन्यासियों एवं विद्वानों के ठहरने हेतु कुटियायें बनवाईं। रुड़की के पास मतलबपुर ग्राम में आर्य समाज स्थापित कर उसका भवन बनवाया। रुड़की में आर्य समाज (राम नगर) की स्थापना में सहयोग दिया तथा यज्ञशाला का निर्माण कराया। जहां कहीं भी वे जाते थे कुछ न कुछ आर्थिक सहयोग, दान आदि देते रहते थे। आपके प्रवचनों का आधार सत्यार्थ प्रकाश ही होता था।

वर्ष १९८३ में गुरुकुल महाविद्यालय, ज्वालापुर हरिद्वार ने, 'विश्व शान्ति और वैदिक धर्म' नामक आपके शोध पत्र (थिसिस) पर आपको 'विद्या-वाचस्पति' (डी.लिट्.) की उपाधि से विभूषित किया गया था। जैसा कि ऊपर स्पष्ट किया जा चुका है महात्मा आर्य भिक्षु जी महर्षि स्वामी दयानन्द सरस्वती के अनन्य भक्त थे। अतः अपने प्रवचन से पूर्व वह ऋषि भजन अवश्य सुनाया करते थे। आश्रम में अपने प्रवचन से पूर्व मुझको बुलाते थे कि 'रमेश, ऋषि का भजन सुना।' मैं व्यासपीठ से समस्त साधकों एवं साधिकाओं के सम्मुख भजनोपदेशक पं.सत्यपाल 'मधुर' द्वारा रचित भजन-'भूलेंगे नहीं वरसों ऋषिराज तेरा आना' सुनाया करता था।

आपने बहुत सी पुस्तकें-

(१) प्रभु की अनुपम देन दयानन्द
(२) ऋषि वचनामृत
(३) ऋषिराज चालीसा
(४) भागवत-खण्डनम्
(५) आर्योद्देश्यरत्नमाला
(६) आर्याभिविनय
(७) बोधामृत
(८) व्याख्यान मुक्तावली तथा
(९) महर्षि दयानन्द एण्ड वर्ल्डपीस

आदि पुस्तकें, 'माता लीलावती आर्य भिक्षु परोपकारिणी न्यास' के माध्यम से छपवाकर निःशुल्क वितरित की तथा समाप्ति पर उनका पुनः प्रकाशन करा कर वितरित किये जाने की समुचित व्यवस्था की हुई है। महर्षि के अमर ग्रन्थ सत्यार्थ प्रकाश के बारे में वह कहा करते थे कि 'हमारी सभी समस्याओं का समाधान सत्यार्थ प्रकाश में निहित है। हम ढूंढ न पायें यह बात अलग है।' दिनांक २३ जून २००१ को लीलावती जी अपने प्रातः स्मरणीय पतिदेव व प्रेरणास्रोत महात्मा आर्य भिक्षु जी को अकेला छोड़कर सदा सर्वदा के लिये दूसरे लोक को प्रस्थान कर गई थीं।।

वर्ष १९९८ में ७५ वर्ष की आयु प्राप्त कर महात्मा जी ने, आर्य जगत् के महान् सन्त स्वामी सर्वानन्द जी महाराज (दीनानगर) से संन्यास की दीक्षा ली तथा आर्य भिक्षु से स्वामी आत्मबोध सरस्वती हुए। परन्तु संन्यास की दीक्षा के उपरान्त तथा संन्यासी हो जाने के बाद भी उनकी प्रसिद्धि व ख्याति महात्मा आर्य भिक्षु के नाम से ही मृत्यु पर्यन्त रही। संन्यासी जो जाने पर वह माता लीलावती जी से अलग दूसरी कुटिया में रहने लगे थे, परन्तु समर्पित व पतिव्रता माता जी, स्वामी जी के स्वास्थ्य, भोजन व कपड़ों की सफाई आदि का पूरा-पूरा ध्यान रखती थीं। प्रचार कार्य में भी उन्हीं के साथ रहती थीं, ताकि उनके प्रति परमेश्वर को प्रवासकाल में उनकी अनुपस्थिति से कोई असुविधा व कष्ट न होने पाये। स्वामी जी ने आजीवन वेद-प्रचार व ऋषि के मिशन को नहीं छोड़ा, उससे मुख नहीं मोड़ा। अस्वस्थ होते हुए भी कलकत्ता, बम्बई व अन्य दूरस्थ नगरों में प्रचारार्थ जाते रहे। एक प्रकार से वह आर्य विरक्त (वानप्रस्थ-संन्यास) आश्रम के पर्याय थे। वे अपने प्रवचनों के अन्त में कहा करते थे-

'निर्धन धनवान से डरता है, निर्बल बलवान से डरता है, मूर्ख विद्वान् से डरता है, परन्तु ये तीनों चरित्रवान् से डरते हैं।'

दिनांक ०३.०६.२००२ को बम्बई काकड़वाड़ी आर्य समाज से लौटने के बाद, आश्रम की अपनी कुटिया में उनकी तबीयत ऐसी बिगड़ी कि सुधर न सकी और ब्रह्म वेला में वह हम सबको सर्वदा के लिए छोड़ कर चले गये। आर्य जगत के लिए यह एक अपूरणीय क्षति है।

(आर्य वानप्रस्थाश्रम की हीरक जयन्ती स्मारिका 'निःश्रेयस' से साभार)

शुभाकांक्षा

'आर्य लोक वार्ता' दिसम्बर २०१९ का अंक पढ़ा। इसके मुखपृष्ठ का डॉ. चन्द्रपाल शर्मा का आलेख 'सीता परित्याग की कलंक-कथा सफेद झूठ का पुलिंदा है'-अत्यंत तर्क-संगत, शोधपूर्ण और यथार्थ को सामने रखने वाली महत्वपूर्ण प्रस्तुति है। निःसन्देह 'सीता निर्वासन प्रसंग' सर्वथा असंगत और अस्वीकार्य है, कारण कि यह वाल्मीकि कृत न होकर, विद्वेषपूर्ण ढंग से अलग से जोड़ा गया है। प्रसिद्ध साहित्यकार डॉ.रामकुमार वर्मा ने भी इसका उद्घोष किया था। इस सन्दर्भ में लेखक ने जो तर्क प्रस्तुत किये हैं, वे सर्वथा अकाट्य और विश्वसनीय हैं। अतएव रामायण को हमें युद्धकाण्ड तक ही मानना चाहिए। परिपुष्ट प्रमाण सहित ऐसी सत्य-शोधी प्रस्तुति हेतु लेखक बधाई का पात्र है।

'विनय पीयूष' के अन्तर्गत श्री अमृत खरे द्वारा अथर्ववेद के मंत्र का सरस सुबोध काव्यानुवाद पूर्व-अंकों की भाँति ही प्रशंसनीय है। 'ज्ञानी कौन?' शीर्षक से प्रस्तुत सम्पादकीय डॉ.आर्य के गहन चिन्तन मनन का सुफल है। ऐसे उदात्त सन्देशपरक आलेख हेतु हार्दिक साधुवाद। पं.शिवकुमार शास्त्री द्वारा 'वेदांजलि' के अन्तर्गत 'कौन से महान गुण देश को स्वाधीन रख सकते हैं' आज के लिए सर्वथा प्रासंगिक और अनुकरणीय है। 'सत्यार्थ प्रकाश' विषयक महर्षि दयानन्द जी के उद्गारों का तो कहना ही क्या? 'त्रिगुण' विषयक अंश पठनीय मननीय है। 'जिज्ञासा और समाधान' के अन्तर्गत अश्वमेघ में अश्व के बलि देने की मिथ्या बात का स्पष्ट खण्डन है। कविवर बाँके बिहारी 'हर्ष' विषयक 'होता परिचय' प्रेरणाप्रद है। 'शुभाकांक्षा' के अन्तर्गत विभिन्न विद्वान-विचारकों, साहित्यकारों के मन्तव्य विविध कोणों से हमें 'वार्ता' को देखने के लिए प्रेरित करते हैं। डॉ.सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार कृत 'आर्य संस्कृति के मूल तत्व' अपनी संस्कृति को सही ढंग से समझने की दृष्टि देती कालजयी कृति है। महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती जी का 'शंकर और दयानन्द' व्याख्यान तुलनात्मक अनुशीलन का श्रेष्ठ सटीक उदाहरण है। 'काव्यायन' स्तंभ की रचनाएँ चित्ताकर्षक हैं। रत्नाकर, दिनकर, रंग, गोमती प्रसाद पाण्डेय 'कुमुदेश' एवं ब्रजेश जी की रचनाएँ तो बेजोड़ हैं।

इसके अतिरिक्त विभिन्न जनपदीय समाचारों, आर्य समाज के आयोजनों, साहित्यिक कार्यक्रमों, विशिष्ट दिवंगत आत्माओं आदि से सम्बन्धित सामग्री द्वारा 'आर्य लोक वार्ता' को और अधिक जन-रुचि के अनुकूल बनाने का सफल उपक्रम सम्पादकीय दृष्टि के विस्तार का सूचक है। ऐसे साहित्यिक सांस्कृतिक राष्ट्रीय भावोद्बोधक पत्र के अनवरत प्रकाशन के लिए अनेकानेक शुभकामनाएँ।

-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'
78, त्रिवेणी नगर-1, डालीगंज क्रासिंग, लखनऊ

***

'आर्य लोक वार्ता' का दिसम्बर २०१९ अंक हाथ में आते ही कई बार मनोयोगपूर्वक पढ़ गया। डॉ.चन्द्रपाल शर्मा ने सीता-परित्याग की कथा को क्षेपक सिद्ध करने हेतु अकाट्य प्रमाण दिये हैं। आपने यह भी लिखा है कि अधिकांश जनता आज भी इस कथा को मनगढ़ंत मानती है और इस पर विश्वास नहीं

करती है, भले ही कवियों ने इस विषय पर अपने काव्य क्यों न लिखे हों, और डॉ. रामकुमार वर्मा ने तो सीता परित्याग की कथा के मिथ्यात्व को प्रदर्शित कर एक सुन्दर काव्य ही लिख डाला है, जिसका नाम है 'उत्तरायण'। यह पुस्तक डॉ.राम मनोहर लोहिया अवध विश्वविद्यालय, फैजाबाद के स्नातक स्तर पर हिन्दी पाठ्यक्रम में स्वीकृत रही है। पता नहीं क्यों डॉ.शर्मा ने इस महत्वपूर्ण पुस्तक का आपने कथन की पुष्टि में कोई जिक्र नहीं किया जबकि डॉ.रामकुमार वर्मा हिन्दी कवियों में प्रमुख स्थान रखते हैं। मुझे आशा है, यदि किसी के मन में इस कथा के मन गढ़ंत मानने में कोई संशय होगा तो वह भी दूर हो जायगा। डॉ.शर्मा को मेरी शतशः बधाई, इस सुन्दर लेख के लिए।

'आर्य लोक वार्ता' के इसी अंक में श्री बाँके बिहारी 'हर्ष' का परिचय देकर सम्पादक जी ने सराहनीय कार्य किया है। ऐसे छिपे रत्नों को कोई पारखी ही प्रकाश में ला सकता है। निःसन्देह डॉ. वेद प्रकाश आर्य ऐसे ही पारखी हैं। सचमुच श्री हर्ष जी 'संत हृदय नवनीत समाना' उक्ति को सार्थक करते हैं। आज वे 'आर्य लोक वार्ता' के माध्यम से, तथा अपने प्रखर व्याख्यानों से जो कार्य कर रहे हैं, वह वैसा कोई नहीं कर रहा है। डॉ.साहब के प्रति अनेकशः शुभकामनाएँ!

-आचार्य सत्यप्रकाश आर्य
आवास विकास कालोनी, बाराबंकी, उ.प्र.

***

'आर्य लोक वार्ता' दिसम्बर २०१९ अंक अत्यधिक प्रभावी रहा है। 'काव्यायन' की रचनाएँ उच्चकोटि की हैं। शुभाकांक्षाएँ बड़ी ही विद्वत्तापूर्ण हैं। डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ' का भाषा पर पूर्ण अधिकार है। उनकी शुभाकांक्षा बड़ी ही हृदयस्पर्शी और मार्मिक है। काफी दिनों बाद सागर संस्कृति एवं सांस्कृतिक संस्थान के संस्थापक श्री वी.एस.पाण्डे द्वारा लिखी गई शुभकांक्षा विशेष महत्व रखती है। आपने स्व. आयुर्वेदाचार्य पंडित देवदत्त त्रिपाठी, ग्राम गोनी, पोस्ट-गौंडवा जिला हरदोई के बारे में जो कुछ लिखा है, वह यथार्थ है। वे मेरे पिता थे, मेरे जीवन को संवारने का सम्पूर्ण श्रेय उन्हीं को जाता है। उनके बारे में जितना कुछ कहा जाय कम ही है। उनका जीवन जितना सरल और सुबोध था, उनकी विद्वत्ता उतनी ही अगाध और अथाह थी। उनके जैसा व्यक्तित्व हरदोई जनपद में उनके समय में कोई नहीं था। सर्वत्र उनकी ख्याति थी, वे अजात शत्रु थे। इस अंक में सम्पादकीय लेख महर्षि दयानन्द के विचारों की महत्ता को प्रदर्शित करता है। ऐसे मौलिक लेख डॉ.वेद प्रकाश आर्य के अलावा कौन लिख सकता है? हार्दिक बधाई।

-रामा आर्य 'रमा'
417/10, नेवाजगंज, चौक, लखनऊ-3

***

'आर्य लोक वार्ता' का अक्टूबर नवम्बर २०१९ अंक संयुक्तांक के रूप में प्राप्त हुआ। मुखपृष्ठ लेख 'रामलला को मिल गई, जन्मभूमि सुखमूल' सर्वोच्च न्यायालय द्वारा ऐतिहासिक फैसला आने के कारण

बड़ा ही समसामयिक लेख है जिसे डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने रामचरितमानस की चौपाइयों के उदाहरण प्रस्तुत कर बहुत ही रोचक रूप प्रदान कर उसे पूर्ण साहित्यिकता के ढंचे में ढाला है, रुचिकर है। 'विजय की हकदार, राणा सांगा की तलवार' शीर्षक सम्पादकीय में भारत के विगत इतिहास की झांकी इसमें दृश्यमान हो उठी है। उक्त सम्पादकीय भी पठनीय है। 'काव्यायन' की रचनाएँ भी मन मोहने की पूर्ण क्षमता रखती हैं। आभा जी के निधन का समाचार पढ़ा, वे अच्छी कवयित्री, कहानीकार व समीक्षक थीं, वह मेरी प्रशंसक और प्रेरणास्रोत भी थीं, उन्होंने मेरे व्यक्तित्व व कृतित्व पर एक लेख 'अबोध के साहित्य में नारी' शीर्षक से 'विश्व विधायक' में प्रकाशित कराया था। आभा जी ने साहित्य जगत को ग्यारह साहित्यिक कृतियाँ दी हैं, जिनमें दो कहानी संग्रह, एक खण्ड काव्य, एक प्रबन्ध काव्य, एक बाल काव्य व छः काव्य संग्रह हैं।

अन्य लेख, समाचार व स्तम्भ सभी ज्ञानवर्द्धक हैं। अच्छे ज्ञानाकार अंक हेतु सम्पादक जी को बहुत बहुत बधाई।

-दयानन्द जड़िया 'अबोध'
370/27, हाता नूरबेग, सआदतगंज, लखनऊ

***

आर्य लोक वार्ता दिसम्बर २०१९ का सम्पादकीय 'ज्ञानी कौन?' में महर्षि दयानन्द सरस्वती जी के अनुसार वह ज्ञानी है 'जो मननशील, होकर स्वआत्मवत् अन्यों के सुख दुख और लाभ हानि को समझे' की बहुत ही उपयुक्त एवं सूक्ष्म व्याख्या की है साथ ही इसे आगे बढ़ाते हुए यह व्यक्त किया है कि मनन बिना सिद्ध किये हुए श्रद्धा का कोई मूल्य नहीं, इसी के अभाव के कारण नेतागण किसी व्यक्ति विशेष की जयन्ती पर समाधि स्थल जाते हैं। इसी ज्ञानाभाव के कारण 'नागरिक संशोधन' का उल्लंघन करते हुए युवा हिंसक प्रदर्शन कर रहे हैं। स्वामी दयानन्द ने आर्य समाज के नियम-५ के अन्तर्गत यह बताया- सब काम धर्मानुसार अर्थात् सत्य व असत्य को विचार करके करने चाहिए। अस्तु यह लेख उपयुक्त, सामयिक एवं ज्ञानवर्द्धक है। इसी अंक के पृष्ठ ३ पर प्रकाशित 'होता सदस्य परिचय' में श्री बाँके बिहारी 'हर्ष' पर लिखा गया लेख मेरी आँखें खोलने के लिए पर्याप्त है। यह व्यक्ति जिसका जीवन सामान्य है पर जब होता (दाता) है धनवान है पर अहंशून्य है। पुत्रवान है पर वीतरागी है। ऐसे तीनों ऐषणाओं से मुक्त पुरुष को मेरा नमन है। फैजाबाद की आर्य समाजों में इनकी उपस्थिति एवं व्यक्ति विशेष के गृह पर जिसमें लेखक स्वयं है संस्कार विशेष पर इनकी उपस्थिति होता के रूप में मैंने प्रत्येक बार देखी है पर मैं उनको पहचान न पाया। आज आपने इनका प्रेरणाप्रद एवं विस्तृत जीवन परिचय प्रकाशित कर हमलोगों के समक्ष प्रस्तुत किया है। एतदर्थ आपको धन्यवाद। यथार्थ में यही लोक वार्ता के वास्तविक 'होता' हैं।

-प्रेमचन्द्र शर्मा
15, बहादुर पुर, लखनऊ

***

दिसम्बर २०१९ का अंक पाकर अत्यंत प्रसन्नता हुई। सम्पादक महोदय का मेरे प्रति स्नेह व सम्मान दोनों व्यक्त हुए। मेरा लेख 'वाल्मीकि रामायण का उत्तरकाण्ड' आर्य लोक वार्ता के दो अंकों में छप चुका था। पाठकों का अपार प्रेम व उत्साह दर्शनीय था। उसे देखकर सम्पादक डॉ.साहब का आग्रह हुआ कि मैं इस लेख का सारांश सरल रूप से प्रस्तुत करूँ। यह लेख लगभग एक दर्जन पत्र- पत्रिकाओं में छप चुका है, उसके बाद भी अपने पत्र में दो-दो बार अर्थात् तीन अंकों में छापना साहसिक पग है। मेरा आभारी होना स्वाभाविक है। वस्तुतः आर्य लोक परिवार का मैं नया सदस्य हूँ, फिर भी स्नेह व सम्मान भरपूर मिल रहा है, यही इस परिवार की विशिष्टता है। पाठकों से मेरा अनुरोध है कि वे इस लेख को अपने परिवेश में पहुँचाकर यज्ञ में आहुति डालने का पुण्य-लाभ प्राप्त करें। कुछ निहित स्वार्थी तत्त्वों और कुछ अज्ञानी भेड़चाल वालों ने भगवान राम के अनुपम, निर्मल, अनुकरणीय, अविस्मरणीय चरित्र पर मिथ्या आरोप लगाकर वैदिक संस्कृति के कीर्तिस्तम्भ की कीर्ति को कलंकित करने का दुष्ट प्रयास किया है। आपकी आहुति वातावरण को सुरभित करेगी। सम्पादकीय समयानुकूल है। सी.ए.ए. का विरोध करने वालों के लिए कहानी फिट बैठती है। एक लड़का अपनी माँ से बोला- 'माँ, मैं शर्त लगा आया हूँ कि हाथी के पाँच पैर होते हैं।' माँ ने कहा-'बेटा पैर चार होते हैं। अतः तू शर्त हार जायेगा।' लड़के का उत्तर कानून के विरोध करने वालों के काम आ रहा है। उसने कहा- 'मैं मानूँगा नहीं, यही कहता रहूँगा कि हाथी के पाँच पैर होते हैं।'

पत्र के स्थायी स्तम्भों में ठोस सामग्री रहती ही है। पं.शिवकुमार शास्त्री का वेदमंत्र राष्ट्र की वर्तमान दशा के लिए समयानुकूल है। समय की असीमिता और पृथ्वी की विशालता विभिन्न युगों में भी एक जैसी सोच की विभूतियों से साक्षात् कराती है। आद्यशंकराचार्य व स्वामी दयानन्द का उदाहरण सटीक ही है। बी.ए. के प्रथम वर्ष में पूज्य गुरुदेव स्व.डॉ.हरीन्द्र शास्त्री से कुरुक्षेत्र पढ़ा तो डिवेटर बन गया और एम.ए.में उद्धव शतक पढ़ा, तो काव्य के रस का आस्वाद लेना आ गया। बलवीर सिंह 'रंग' की कविता की टेक-'जाने क्यों तुमसे मिलने की आशा कम विश्वास अधिक है' अक्सर गुनगुना लेता था। पूरी कविता पढ़ने को मिली, धन्यवाद। अमर हुतात्मा स्वामी श्रद्धानन्द जी का पुण्य स्मरण यह राष्ट्र सदैव करता रहेगा।

-डॉ.चन्द्रपाल शर्मा
सहयोग, सर्वोदय नगर, पितखुआ-245304

***

आर्य्य लोक वार्ता के अक्टूबर-नवम्बर व दिसम्बर २०१९ के अंकों में 'ज्ञानी कौन?' जिज्ञासा का समाधान पढ़कर मुझे प्रसन्नता हुई। मैं आभारी हूँ।

महर्षि दयानन्द सरस्वती का कथन 'जो मननशील होकर स्वात्मवत अन्यों के सुख दुख और हानि लाभ को समझता हो उसी को मनुष्य कहना।' दिसम्बर २०१९ के अंक में सम्पादकीय स्तम्भ में मननशीलता- ज्ञान और कर्म विद्या और अविद्या आदि मनुष्यत्व की आधारशिला है। जो भी मनुष्य इनका वांछित अर्थ समझकर उनको अपने जीवन में उतार लेता है वह श्रेष्ठ मनुष्य अर्थात् ज्ञानी होता है। आचार्य विनोवा भावे का कथन 'ज्ञानी वही है जो वर्तमान को ठीक प्रकार समझे और परिस्थिति के अनुसार आचरण करे'। आर्य्य लोक वार्ता के अक्टूबर-नवम्बर अंक में ही पृष्ठ ६ पर 'काव्यायन' स्तम्भ में विख्यात कवयित्री रामा आर्य 'रमा' जी की प्रस्तुति 'प्रेम भावना' की एक पंक्ति 'प्रेम महा गुरुज्ञान है, कहते संत सुजान' में भी ज्ञानी कौन जिज्ञासा का समाधान निहित है। मेरे विचार में जो मनुष्य ईश्वर भक्ति में लीन रहते हैं, परमात्मा का गुणगान करते हैं और मस्त रहते हैं वही सुखी है, ज्ञानी है और उन्हें परमानन्द प्राप्त होता है।

मैं तो अविद्या का अज्ञान तथा विद्या को ज्ञान मानता हूँ और यही मेरा लक्ष्य है भले ही ज्ञानी पूर्ण रूप से न बन पाऊँ। मैं आर्य्य लोक वार्ता की निरन्तर उन्नति के लिए प्रार्थना करता हूँ।

-पाल प्रदीप
योगाश्रम, सेक्टर-डी, अलीगंज, लखनऊ

***

अक्षर लोक

ऐसा वर दो (छन्द संग्रह)
छन्दकार : दयानन्द जड़िया 'अबोध'
प्रस्तुति : पेपर बैक/पृष्ठ १०४
मूल्य : दो सौ रुपये
प्रकाशक : त्रिमूर्ति प्रकाशन, लखनऊ

नये-नये छन्दों के सृजन में रुचि रखने वाले वरिष्ठ छन्दकार दयानन्द जड़िया 'अबोध' का नया छन्द-संग्रह 'ऐसा वर दो' शीर्षक से प्रकाशित हुआ है। यथा नाम तथा गुणः। इस संग्रह की प्रत्येक रचना सरस्वती-स्तुति, वाणी-वन्दना ही हैं, एक सौ सत्रह प्रकार के छन्दों में, दो सौ ग्यारह वाणी-वन्दनायें! इसमें पैंसठ प्रकार के पारम्परिक छन्द हैं, जो 'अबोध' जी के नवसृजित नूतन बावन छन्द भी हैं। पारम्परिक छन्दों में कुछ छन्द विदेशी भी हैं जैसे हाइकू, ताँका, त्राइले! सभी छन्द भाव, भाषा, शिल्प, रस, अलंकार आदि की दृष्टि से प्रभावशाली, चित्ताकर्षक और सार्थक बन पड़े हैं। छन्द में रुचि रखने वाले पाठकों तथा छन्दकारों के लिए 'ऐसा वर दो' सन्दर्भ ग्रन्थ जैसा महत्व रखती है। 'अबोध' जी निश्चित ही साधुवाद के पात्र हैं।

पुस्तक का मुद्रण साफ-सुथरा है। आशा है काव्य-प्रेमी इसे हाथों-हाथ लेंगे।

धारावाहिक-11 कालजयी रचना

आर्य-संस्कृति के मूल तत्त्व

-डॉ. सत्यव्रत सिद्धान्तालंकार-

नहि कश्चित् क्षणमपि जातु तिष्ठत्यकर्मकृत्।
कार्यते ह्यवशः कर्म सर्वः प्रकृतिजैर्गुणैः।।

कर्म छोड़कर कौन रह सकता है? कर्म करना तो हामरी प्रकृति में निहित है। हम चाहें, न चाहें, संसार में हम आ पड़े हैं, इससे इन्कार किया नहीं जा सकता, कर्म किये बगैर रहा नहीं जा सकता। जगत् सत्य हो, असत्य हो, यथार्थ हो, मिथ्या हो--जब हम चारों तरफ संसार से घिरे हैं तब कैसे हो सकता है कि इसे बिलकुल मिथ्या समझकर हम काम छोड़कर बैठ जायं? परन्तु अगर काम करेंगे तो दुःख लगा रहेगा, इस दुःख से छुटकारा कैसे होगा? यह समस्या अर्जुन की ही नहीं, प्रत्येक व्यक्ति की है, प्रत्येक ऐसे व्यक्ति की जो जीवन के प्रश्न पर विचार करता है।

कर्म नहीं, कर्म के फल की आशा छोड़ना निष्काम-कर्म है-

श्रीकृष्ण महाराज ने इस समस्या का गीता में जो उत्तर दिया है वह आर्य संस्कृति का बीज-मंत्र है। गीता पूछती है, कर्म क्यों न करें, संसार से नाता क्यों तोड़ दें? इसलिये न, क्योंकि मनुष्य संसार में लिप्त हो जाता है, कर्म मनुष्य को बांध लेता है। अगर यही बात है तब ऐसा उपाय क्यों न निकालें जिससे 'कर्म' तो हो जाय, क्योंकि कर्म के बगैर हम रह ही नहीं सकते, परन्तु कर्म से उत्पन्न होने वाला 'बन्धन' पैदा न हो, संसार भी बना रहे और संसार में होने वाला लेप भी न हो, सांप भी मर जाय और लाठी भी न टूटे। गीता ने आर्य-संस्कृति के जिस रहस्यमय सन्देश का वर्णन किया है, वह आर्य-संस्कृति का बीज-मंत्र यही है कि कर्म करते जाओ, परन्तु उसके बन्धन को मत पड़ने दो, संसार में रहो, इसलिये रहो क्योंकि तुम इसे छोड़ना चाहो तब भी छोड़ नहीं सकते, परन्तु इसमें रहते हुए इसके भोक्ता बनकर रहो, इसके भोग्य बनकर मत रहो, जीवन के चरखे पर शरीर-रूपी पूनी लेकर कर्म का सूत कातते जाओ, परन्तु उसमें गांठ मत पड़ने दो--यह विचारधारा है जिसको उपदेश श्रीकृष्ण ने अर्जुन को दिया है, इसी को गीता ने 'कर्म-योग' कहा है।

परन्तु क्या यह संभव है कि हम संसार में रहें और उसमें लिप्त न हों, कर्म करें और कर्म का बन्धन न पड़ने दें? आर्य-संस्कृति के अध्यात्मवाद का कहना है कि यह संभव ही नहीं है, यही जीवन का सही रास्ता है। कर्म करते हुए उसके बंधन को न पड़ने देना, संसार में रहते हुए संसार से मुक्त रहना--इस मार्ग का उल्लेख करते हुए गीता का कथन है—

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूः मा ते संगोऽस्त्वकर्मणि।।

योगस्थः कुरु कर्माणि संगं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्यते।।

विहाय कामान् यः सर्वान् पुमांश्चरति निस्पृहः।
निर्ममो निरहंकारः स शांतिमधिगच्छति।।

कर्म करो, फल की इच्छा मत करो। कर्म के फल की कौन आशा नहीं करता? हरेक करता है। वह आशा करना 'संग' कहाता है, 'सकाम-भाव' कहाता है, उस आशा का त्याग देना 'निस्संग-कर्म' है, 'निष्काम-भाव' है। हे अर्जुन ! तू कर्म कर, परन्तु निस्संग होकर, निष्काम होकर, निर्लिप्त होकर--बस, यही 'योग-मार्ग' है। निस्संग-कर्म करने का परिणाम यह होगा कि कर्म में सिद्धि हो, असिद्धि हो, सफलता हो, असफलता हो, मनुष्य में समता रहेगी, और समता रहेगी तो शांति रहेगी, दुःख नहीं होगा।

'कर्म-संन्यास' या 'सांख्य-मार्ग' तो सीधा-सादा उत्तर देता है--संसार असार है, इसमें कर्म क्या करना, इसलिये कर्म का झगड़ा छोड़ो, कर्म छूट जायगा, तो कर्म-जन्य दुःख अपने-आप छूटेगा। इसके विपरीत, 'कर्म-मार्ग' या 'योग-मार्ग', यह कहता है कि संसार असार तो है, परन्तु इसकी सत्ता से भी तो इन्कार नहीं किया जा सकता, संसार है, तो कर्म छोड़े भी छूट नहीं सकता। कर्म नहीं छूट सकता, परन्तु हां, कर्म के साथ लगा हुआ कर्म-फल का जो मोह है, संग है, ममता है, कामना है, अहंकार है, मैंने किया अतः मुझे ऐसा फल मिले, वैसा फल मिले, यह भावना है--इसका त्याग किया जा सकता है। 'सांख्य-मार्ग' तथा 'योग-मार्ग'--दोनों का उद्देश्य एक है, दोनों कर्म के बन्धन में नहीं पड़ना चाहते--'साख्ययोगौ पृथग्बालाः प्रवदन्ति न पंडिताः'--परन्तु 'सांख्य-मार्ग' कर्म के बन्धन को छोड़ने के लिए कर्म को ही छोड़ बैठता है, और 'योग-मार्ग'--वह मार्ग जिसका प्रारम्भ विवस्वान् के समय से हुआ था, जो इक्ष्वाकु और मनु का मार्ग था, जो समय-समय पर लुप्त होता रहा परन्तु आर्य-संस्कृति की विचारधारा के वेग के कारण लुप्त होता-होता बार-बार प्रकट होता रहा, जिसका श्रीकृष्ण ने गीता में उपदेश दिया—वह मार्ग जीवन के प्रति क्रियात्मक दृष्टिकोण लेकर कहता है कि कर्म मत छोड़ो, कर्म-फल की आशा से दुःख होता है अतः उस आशा को त्याग दो। जीवन में कार्य करने की इस दृष्टि को, इस विचारधारा को निष्काम-कर्म, निस्संग-कर्म, निर्मम-भाव, निर्मोह-भाव, निरहंकार-भाव कहा गया है। यह हो सकता है कि जिस व्यक्ति को कर्म में से संग काट देने के लिये कहा जाय वह संग को छोड़ने के बजाय कर्म को ही छोड़ बैठे, परन्तु जब हमने यह भली प्रकार जान लिया कि कर्म तो हमसे छूट ही नहीं सकता--और यही बात श्रीकृष्ण ने अर्जुन को बार-बार समझाने का यत्न किया है--तब तो हमारे पास सिर्फ एक मार्ग रह जाता है, और वह है संग को, फलाशा को, मोह को, कर्म-फल के साथ आसक्ति को छोड़ देना। श्रीकृष्ण महाराज इस बात को भली भांति समझते थे कि यदि संग को, आसक्ति को छोड़ने के लिये कहा जायगा तो मनुष्य कर्म से ही उदासीन हो जायगा, उत्साह से कार्य न करेगा, इसलिये उन्होंने कहा--

('आर्य संस्कृति के मूलतत्त्व' ग्रंथ से साभार क्रमशः)

व्याख्यान माला-3

शंकर और दयानन्द

-महात्मा आनन्द स्वामी सरस्वती-

लोग सेवा भी करते हैं तो वोट प्राप्त करने के लिये। जहाँ वोट मिलने की आशा न हो, वहां उनका सेवा करने को ही जी नहीं चाहता। परन्तु आत्मा की खोज करनी हो तो केवल इस लोक के नहीं परलोक के लोभ को भी त्यागना पड़ता है।

तीसरी बात को कहते हैं षट सम्पत्ति। छः प्रकार की सम्पत्ति। इनमें से पहली सम्पत्ति है शम-प्रत्येक दशा में शान्त रहो। संसार तो शान्त नहीं है। हर ओर उथल पुथल मच रही है। कितने ही उतार चढ़ाव होते हैं। बाढ़ आती है, भूकम्प आते हैं, गांव उजड़ते हैं, शहर नष्ट होते हैं, बच्चे अनाथ होते हैं, विनाश नाच उठता है। इन सबके होते हुए शान्त रहना, यह है शम। तुम्हारे शान्त होने से संसार बदलेगा नहीं। इसी प्रकार चलता जायेगा। विचार कर देखो, यह संसार क्यों बना? इसलिए कि लोग अपने किये कर्मों का फल भोग सकें। नये और उत्तम कर्म करके ईश्वर के पास पहुँच सकें। ऐसी दुनियाँ में पूर्ण शान्ति मिलेगी कैसे, भगवान् राम को भी चौदह वर्ष तक जंगलों में भटकना पड़ा। भगवती सीता को भी रावण की कैद में जाना पड़ा। जब तक शरीर है, तब तक सुख और दुःख, पाप और पुण्य, रोग और शोक सब को रहना है। यदि दुःख का अन्त चाहते हो तो केवल एक ही रास्ता है अपने कर्म को करते जाओ और शान्त रहो। एक कवि ने कहा था-

या खून पसीना करके बहा,
ताज के चादर सोता जा।
यह नाव तो चलती जाएगी,
तू हंसता रह या रोता रह।।

तुम्हारे हँसने या रोने से संसार बदलेगा नहीं। केवल अपना कर्तव्य पूरा करो और शान्त रहो। इन जलती हुई ज्वालाओं में, दहकते हुए ज्वालामुखियों में डोलने दो संसार का जहाज। तुम अडोल होकर बैठे रहो। यह है शम, छः सम्पत्तियों में एक सम्पत्ति। शेष सम्पत्तियों की बात अगले भाषण में बताऊँगा।

।।ओ३म शम्।।

दूसरा दिन

प्यारी माताओं और सज्जनों!

जगद्गुरु शंकराचार्य और महर्षि दयानन्द की बात कह रहा था मैं। दोनों ने कहा-

"अथातो ब्रह्म जिज्ञासा"

(अब ब्रह्म की खोज आरम्भ होगी) कहने के पूर्व कहने वाले में चार गुण होने चाहिये। वेदान्त और आत्मिक ज्ञान की भाषा में इन चार गुणों को 'साधन चतुष्टय' कहते हैं। श्री शंकर ने विवेक चूड़ामणि और तत्व बोध में और महर्षि दयानन्द ने सत्यार्थ प्रकाश और ऋग्वेदादि-भाष्यभूमिका में इनका वर्णन किया है। कुछ कह सकते हैं कि खोज तो ब्रह्म की करनी है, फिर पहले इन चार गुणों की क्या आवश्यकता है। क्या कोई व्यक्ति बिना पढ़े लिखे जाकर कह सकता है कि 'मुझे इंजीनियरिंग कालेज में प्रविष्ट करके इंजीनियरिंग की या मेडिकल कालेज में प्रविष्ट करके डाक्टर की डिग्री दे दो?' नहीं, इन कालेजों में प्रविष्ट होने से पूर्व कुछ और डिग्रियां प्राप्त करनी पड़ती हैं। इसी प्रकार 'ब्रह्म प्राप्ति' के कालेज में प्रविष्ट होने से पूर्व भी चार साधनों को अपना कर चार गुण अपने अन्दर उत्पन्न करने पड़ते हैं। ये चार गुण हैं- आत्मा और अनात्मा का विवेक, लोक और परलोक में कर्म के फल से वैराग्य, 'षट् सम्पत्ति' और मुक्ति की तीव्र इच्छा।

इन चारों गुणों का वर्णन करते हुए जगद्गुरू शंकराचार्य चूड़ामणि के ६४वें श्लोक में कहते हैं, 'जैसे रोगी पुरुषों का रोग केवल औषध का नाम सुन लेने मात्र से दूर नहीं हो जाता, ऐसे ही भव बन्धन से ब्रह्म का साक्षात् अनुभव किये बिना केवल यह कह देने से कि मैं ब्रह्म हूँ, कोई मुक्ति नहीं पा सकता। मैं ब्रह्म हूँ, ऐसा कहने का अधिकार केवल उस व्यक्ति को है, जिसने इन चार गुणों को क्रियात्मक रूप देकर परमात्मा का साक्षात्कार कर लिया है।' आगे चलकर एक और स्थान पर उन्होंने कहा है, 'सब शत्रुओं को नष्ट किए बिना और सबको विजय किये बिना जैसे कोई व्यक्ति मैं राजा हूँ कहने से राजा नहीं हो जाता, उसी प्रकार इस भव सागर को पार उतरे बिना कोई व्यक्ति मैं ब्रह्म हूँ कहने से मुक्त नहीं हो सकता।'

इन चार गुणों की चर्चा मैंने कल की थी। उनमें से 'षट् सम्पत्ति' छः प्रकार की सम्पत्ति के सम्बन्ध में भी कहा था। यह सम्पत्ति है -'शम्'। प्रत्येक दशा में अपने आप को शान्त रखना। सुख में और शान्ति में तो सब व्यक्ति शान्त रहते ही हैं। जब सुख और शान्ति दोनों न हों, चहुँ ओर ज्वालायें जल रही हों, उथल पुथल हो रही हो, पृथ्वी काँपती हो, नौका डगमगाती हो, तूफान चीखता फिरता हो, बाढ़ डराती हो, तब भी शान्त रहना इसका नाम 'शम्' है।

आप कहेंगे संसार में कौन है जो शान्त नहीं रहना चाहता, कौन है जो दुःखी होना चाहता है, कौन है जो भूखा रहना चाहता है, निर्धन होना चाहता है, चिन्ता में डूबना चाहता है? परन्तु जब यह सबकुछ हो तब व्यक्ति शान्त रहे तो किस प्रकार? इस प्रश्न का उत्तर सुनिए। मनुष्य के अन्दर शान्ति तब आती है, जब उसके अन्दर मानसिक बल हो। मेरा मन जब मेरा बन जाए तब शम् का गुण प्रकट होता है अवश्य। आप कहेंगे मानसिक बल को उत्पन्न करने की विधि क्या है? वह भी सुनिए। मानसिक बल को पैदा करने की विधि है संसार को उसके वास्तविक स्वरूप में समझना। दो प्रकार के तत्व हैं संसार में- एक आत्मतत्व है, दूसरा अनात्मतत्व। ऐसा तत्व जो आत्मा नहीं है, केवल प्रकृति है, माया है, नाश होने वाला है। दोनों को पहचानो। जो नाश होने वाला है उसका आश्रय न लो। आज नहीं तो कल, कल नहीं तो सहस्र वर्ष, लाख वर्ष, करोड़ वर्ष के पश्चात् वह समाप्त हो ही जाएगा निश्चय रूप से। तब तुम निराश्रय हो जाओगे और लाख या करोड़ वर्ष की बात क्या, यह तो प्रतिक्षण परिवर्तित और नष्ट होता है। क्षण क्षण में रंग बदलता है, वास्तविक नहीं। पिता समझता है कि वह पुत्र का आश्रय लेगा, पुत्र समझता है पिता का आश्रय लेगा। दोनों नहीं समझते कि एक दिन पिता रहेगा न पुत्र। एक मनुष्य मित्र का सहारा ढूँढता है, दूसरा शक्ति का, शासन का। मैं तो यह कहता हूँ कि माया को अपने स्थान पर समझो, यह ठगनी है, सदा साथ नहीं देगी। सर्वदा साथ देने वालो वेद के अनुसार परमात्मा है। वेद में कहा है-

"प्रजापति तुझसे बड़ा संसार में कोई नहीं, जिस कामना को लेकर मैं तुझे बुलाता हूँ उसे पूरा करो। मुझे अनन्त सम्पत्तियों का स्वामी बनाओ।"

तो मैं नहीं कहता कि धन और शक्ति, शासन और सम्बन्धी बुरे हैं अच्छे हैं वे। उचित रूप में उन्हें प्राप्त करने का प्रयत्न अवश्य करो, परन्तु उन्हें आश्रय बना लोगे तो अवश्य धोखा खाओगे। वे सदा रहने वाले नहीं, अन्त में धोखा देते हैं। आश्रय लेना है तो उसका लो जो सदा रहता है, जो कभी धोखा नहीं देता। ये माता और पिता, बेटे और बेटियाँ, सगे सम्बन्धी कोई भी साथ नहीं जाते। धन और मकान, शासन और जागीर सब यहीं रह जाते हैं। मरते समय प्रत्येक व्यक्ति को यह बात अनुभव होती है। सिकन्दर भी कहता है, मेरे हाथ खोल दो जिससे लोग देखें कि उनमें कुछ नहीं है। मैंने जीते जी इस बात का अनुभव किया। कैलाश की यात्रा में मेरे दस साथी थे- नौ बंगाली एक मद्रासी। गरवियांग से हम लोग चले तो अपने लिए तम्बू इकट्ठे लिए। पथ प्रदर्शक लिया। खाने का राशन भी उठा लिया। मैं हँसता बहुत हूँ। दूसरों को भी हँसाता हूँ। मेरे वे साथी कहते थे, 'आनन्द स्वामी तेरे साथ रहने में जो आनन्द है, वह हमने कभी देखा नहीं, हम तो अब तेरे साथ ही रहेंगे।' मैंने हँसते हुए कहा, 'रहो ना, इससे अच्छा क्या है?' परन्तु वापस आती बार मैं बर्फ से गिर पड़ा। लिप्पू लेक घाटी पर बर्फ बहुत थी। पाँव फिसला। दूर तक फिसलता गया। बर्फ के एक तोदे ने रोक लिया, नहीं तो आज आपको यह भाषण न सुनना पड़ता। कठिनता से उठा--परन्तु पांव चिल्ला उठा कि मैं टूट चुका हूँ। उसे घसीटता हुआ पंजम तक पहुँचा। पंजम नगर या ग्राम नहीं केवल एक खुले मैदान का नाम है। मेरे बंगाली साथियों ने जब देखा कि यह तो चल नहीं सकता, तो मुझे वहीं छोड़कर चले गये, थोड़ी देर पश्चात् मद्रासी आये, वे भी जल्दी का बहाना करके चले गये, उन्हें गरबियांग पहुँचना था। मैं अकेला रह गया, चल नहीं सकता, आस पास कोई व्यक्ति नहीं। तभी 'कीच खम्बा' का भाई अया। उसे मैंने कहा कि मैं चल नहीं सकता, कीच खम्बा ने बोला कि या तो झब्बू (तिब्बती बैल) भेजे या कम्बल, जिससे रात्रि व्यतीत कर सकूँ। पर्याप्त रात्रि व्यतीत होने पर कीच खम्बा आया। मुझे साथ लेकर गरबियांग पहुँचा। वहाँ पहुँचा तो सुना कि बंगाली और मद्रासी सब आगे चले गये हैं। मैं चल नहीं सकता था। एक दिन पड़ा रहा, दो दिन पड़ा रहा, अन्त में कीच खम्बा ने कहा, 'यहाँ कब तक पड़े रहोगे, सर्दी बढ़ी जाती है, कुछ ही दिनों में बर्फ पड़ने लगेगी, मार्ग बन्द हो जायेंगे। एक डाण्डी करा लो, उसमें चारचूला तक चले आओ, उससे आगे घोड़ा मिल जायेगा। काफी रुपयों पर एक डाण्डी कर ली गई। छः कुलियों ने उसे उठाया। चालचूला की ओर चले हमलोग।

('शंकर और दयानन्द' से, क्रमशः)

काव्यायन

महर्षि दयानन्द यशोगान

❑राघवेन्द्र शर्मा त्रिपाटी 'ब्रजेश'

देस प्रेम पुलकि भलाई सब की निहारि
एकता को मूल मंत्र प्रथम प्रकास्यो जौन।
शिक्षा ओर ध्यान सब ही को दै ब्रजेश बेस
दीन दुखियान देखि भारती रही न मौन।
आर्य्य जनता को निज गौरव दिखायो
सरसायो सुखसत्य धर्मधुर को रह्यो जो तौन।
जीवन सफल धन्य स्वामी श्री दयानँद
महर्षि अजरामर सुयस कै कियो यों गौन।।

बिदित ब्रजेश बेद बिद्या को बिसद बाँस
प्रेम को पुनीत पट पाट ही को जोह्यो जात।
सूची नीति डोरी सूत्त सुखद सुरीति साथ
सत्य दृढ़ता सों है बनायो धर्म दिव्य गात।
भारत मही मैं ओम अंकित नमस्ते कहि
गाड्यो आर्य्य बीरन उदारता सों अवदात
स्वामी श्री दयानँद महर्षि की बिलोको वही
जीवन जयन्ती बैजयन्ती आज फहरात।।

(सन् 1933 में प्रकाशित 'ब्रजेश-विनोद' से)

लिए तिरंगा हाथ में

❑दयानन्द जड़िया 'अबोध'

कहे कहानी शौर्य की, सदा रंग केसरियाधारी,
विश्व शान्ति की बात, धवल रंग कहता प्यारी।
हरी भरी हो भूमि, हरा रंग कहता सबसे,
रहो मित्र गतिशील, चक्र बतलाता कब से।
ऐसा पावन राष्ट्रध्वज, ले आगे बढ़ते जाइये,
आयें संकट कोटि भी, पर रिपु को दूर भगाइये।

राष्ट्र पताका सदा, व्योम में यों लहराये,
इन्द्र धनुष जिस भाँति, रंग अपने दिखलाये।
राष्ट्र-ध्वजा का गान, मान हो हमको प्यारा,
ज्यों चातक को स्वाति, बूँद जीवन से न्यारा।
लिए तिरंगा हाथ में, आगे बढ़ते ही चलें,
सम्मुख शत्रु 'अबोध' हो, उसको पर तल से दलें।

–चन्दा मण्डप, हाता नूरबेग, संगमलाल दीक्षित का, सआदतगंज, लखनऊ-03

परिवार

❑रमा आर्य 'रमा'

बिखर रहे परिवार हैं, भटक रहे इंसान।
सम्बन्धों की टूट से, कौन 'रमा' अनजान।।
अन्तस से करिये 'रमा', स्वजनों की पहचान।
प्रेम-सूत्र टूटे नहीं, सदा रहे यह ध्यान।।
'रमा' टूट कर भूमि पर, बिखरे मोती माल।
सदा पिरोते ही गया, जिनका जीवन काल।।
परिवारों के गठन का, 'रमा' एक ही मूल।
संस्कारों की बेल पर, खिले सुसंस्कृति फूल।।
जिनके घर होती 'रमा', कहीं श्रेष्ठ संतान।
सुख पाता परिवार है, रहे विश्व कल्यान।।
धन्य-धन्य वह कुल 'रमा', धन्य-धन्य संतान।
जिनके हों माता-पिता, धार्मिक अरु विद्वान।।
मातु-पिता के जो सदा, चलते हैं विपरीत।
वे ही दुख पाते 'रमा', जग की है यह रीत।।

'रमा सतसई' से

–417/10, निवाजगंज, चौक, लखनऊ

जोड़ दीजिये

❑डॉ. कैलाश निगम

याद कर तुलसी, कबीर,
सूर, नानक को
सुप्त मनुजत्व वाला
मुख मोड़ दीजिये।
जायसी, मुईनुद्दीन,
शेख व मंसूर बन
सत्य, एकता का
फिर सूत्र जोड़ दीजिये।
कोई शक्ति प्रगति की
राह रोक पाये नहीं
बाधा के समस्त
बन्धनों को तोड़ दीजिये।
देशहित मूलमंत्र
लेकर ही चलना है
व्यक्तिवाद, स्वर्थपरता
को छेड़ दीजिये।

–4/522, विवेक खण्ड, गोमतीनगर, लखनऊ

धर्मरथी

❑डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

'परहित' निज-स्वार्थ-त्याग करना परार्थ,
हानि की न परवाह कर कष्ट झेलना।
लेकर उमंग की तरंग परकाज की,
दूसरों के दुःख की शिलाओं को ढकेलना।
निर्बल-निरीह-आँसुओं की पीर-अनुमान,
शुष्क-म्लान-मनों पर स्नेह-वारि मेलना।
उपकार विरला है धर्म का किरीट-रत्न
धन्य है परार्थ निज प्राणों पर खेलना।।

'ईश के भजन' जैसा सारथी-सुजान कौन,
आपदा-अलंघ्य का भी कर देता उपचार।
बिना किसी इंगित के रहता सुरक्षा-रत,
ईश-ध्यान-ज्ञान सबसे समर्थ कर्णधार।
'विरति' है जगत के विषयों में दोष-दृष्टि,
ऐसी ढाल ठेलती कराल-काल के भी वार।
प्राप्त जितना उसी में तृप्त रहना 'सन्तोष'
माया के प्रपंच का न रंच सोच या विचार।।

–538क/88, त्रिवेणी नगर–1, लखनऊ–20

हर्ष-चतुष्पदी

गद्दार कौन है?

❑बाँके बिहारी 'हर्ष'

नागरिकता क्या महज कानून है?
एकता-उत्कर्ष का मजमून है?
क्यों करे, इस ऐक्ट से इनकार वह-
हिन्द का जिसकी रगों में खून है।

जिसे सी. ए. एक्ट से इनकार है,
हिन्दुओं पर जुल्म अंगीकार है,
जिसे पाकिस्तान पर एतवार है,
क्यों न समझें, व्यक्ति वह गद्दार है!

–अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद

कालजयी काव्य

गणतंत्र दिवस पर

पहरुए, सावधान रहना!

❑गिरिजा कुमार माथुर

आज जीत की रात
पहरुए, सावधान रहना
खुले देश के द्वार
अचल दीपक समान रहना

प्रथम चरण है नये स्वर्ग का
है मंज़िल का छोर
इस जन-मंथन से उठ आई
पहली रतन हिलोर
अभी शेष है पूरी होना
जीवन मुक्ता डोर
क्योंकि नहीं मिट पाई दुख की
विगत साँवली कोर

ले युग की पतवार
बनु अंबुधि महान रहना
पहरुए, सावधान रहना

विषम शृंखलाएँ टूटी हैं
खुली समस्त दिशाएँ
आज प्रभंजन बनकर चलतीं
युग-बंदिनी हवाएँ
आज पुराने सिंहासन की
टूट रही प्रतिमाएँ

उठता है तूफान, इन्दु तुम
दीप्तिमान रहना
पहरुए, सावधान रहना

ऊँची हुई मशाल हमारी
आगे कठिन डगर है
शत्रु हट गया, लेकिन उसकी
छायाओं का डर है
शोषण से मृत समाज
कमज़ोर हमारा घर है
किन्तु आ रही नई ज़िन्दगी
यह विश्वास अमर है

जनगंगा में ज्वार,
लहर तुम प्रवहमान रहना
पहरुए, सावधान रहना

(श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन से)

मिट्टी वतन की पूछती

❑हंस कुमार तिवारी

मिट्टी वतन की पूछती वह कौन है, वह कौन है,
इतिहास जिसपर मौन है?

जिसके लहू की बूँद का टीका हमारे भाल पर,
जिसके लहू की लालिमा, स्वातंत्र्य-शिशु के भाल पर,
जो बुझ गया गिर कर गगन से, निमिष में तारा सदृश,
बच ओस जितना भी न पाया, अश्रु जिसका काल पर
जो दे गया जीवन विजन के फूल-सा हँस नाश को...
जिसके लिए दो बूँद भी स्याही नहीं इतिहास को?
वह कौन है?

जिसके मरण के नेह से, दीपक नये युग का जला,
काजल नयन के मेह से, मरुथल मनुज-मन का फला,
चुनता गया पद-पद्म से, कंटक मनुज की राह का,
विष दासता को, मुक्ति को, निज मृत्यु का अमृत पिला,
चुभती न स्मृति जिसकी कभी, जो मैं किसी के शूल-सी,
झरते न जिस पर आँख से, दो आँसुओं के फूल ही !
वह कौन है?

लगता नहीं उसकी चिता पर आज मेला ही यहाँ,
दो फूल क्या, मिलता किसी से हाय ढेला भी कहाँ?
वह मातृभू पर मर गया, फिर भी रहा अनजान ही-
इस मुक्ति-उत्सव पर डला उस पर न धेला भी यहाँ;
वह कब खिला, कब झर गया अज्ञात हरसिंगार-सा
किसको पता है दासता के काल उस अंगार का?
वह कौन है?

(श्रेष्ठ हिन्दी गीत संचयन से)

आत्मबोध जयन्ती

❑लक्ष्मी आर्या

हे वाग्विद्या के धनी, मेधाव्रती, आत्मारथी।
शुचि आर्यवानप्रस्थ आश्रम के कुशल रथ सारथी।।
ऋषिवर दयानन्द देव के अनुचर अनन्य तपोव्रती।
हे आर्यभिक्षु! बने तुम्हीं अब आत्मबोध सरस्वती।।

तुम धर्म देव प्रशिष्य हो, श्रुति शिष्य ऋषि दयानन्द के।
तुम प्रेरणाफल ब्रह्मचारी विज्ञ अखिलानन्द के।।
नव विश्व मंगल भावना के भव्य भावों को भरे।
शतवर्ष भारतवर्ष में तब भारती गूँजा करे।।

–आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार

राजस्थान-समाचार

आर्य समाज ने आम जन को जीवन जीने की कला प्रदान की -सज्जन सिंह कोठारी

कोटा, १६ जनवरी। आर्य समाज ने जन-जन को जीवन जीने की कला प्रदान की है। ऋषि दयानन्द के उपकारों से आज सम्पूर्ण विश्व में आर्य विचारों व विद्वानों की धूम मची है। आर्य समाज में सामाजिक कार्यों के साथ-साथ आध्यात्मिक कार्यों की दिशा में भी काम किया जा रहा है। ये उद्‌गार पूर्व लोकायुक्त राजस्थान श्री सज्जन सिंह कोठारी ने व्यक्त किये। श्री कोठारी ने बताया कि एक गायत्री मंत्र को यदि अर्थ सहित उच्चरित किया जाए तो वही मानव कल्याण का प्रथम सोपान है। आत्मिक उन्नति ही हमें उन्नति के शिखर पर ले जा सकती है जिसकी आज समाज में बहुत आवश्यकता है। इस अवसर पर आर्य समाज के प्रतिनिधियों द्वारा श्री कोठारी को केसरिया साफा, मोतियों की माला पहनाकर तथा शॉल ओढ़ाकर उनकी धर्मपत्नी के साथ अभिनन्दन किया गया।

विज्ञान नगर में आयोजित इस संगोष्ठी में अर्जुनदेव चड्ढा, पी.सी.मित्तल, कैलाश वाहेती, अरविन्द पाण्डेय, रामनारायण कुशवाह, राधावल्लभ राठौर, लाल चंद आर्य, सूरत सिंह यादव, चन्द्रमोहन कुशवाह एडवोकेट, डा.वेद प्रकाश गुप्ता, प्रदीप शर्मा, किशन आर्य, हर्ष कोठारी तथा अनिता कोठारी ने अपने विचार व्यक्त किये। कार्यक्रम का संचालन चन्द्रमोहन कुशवाह ने किया व अर्जुनदेव चड्ढा ने सभी का आभार व्यक्त किया। प्रार्थना मंत्रों के साथ कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ व *शांतिपाठ के साथ कार्यक्रम का समापन किया गया। (पूरत सिंह यादव, सहसंयोजक)*

आर्य प्रतिनिधियों का हुआ सम्मान

कोटा, २८ दिसम्बर। सिक्ख धर्माचार्यों द्वारा सेवा के क्षेत्र में किए गए कार्यों के उपलक्ष्य में आर्य समाज के प्रतिनिधि का सम्मान किया गया। प्रांतीय प्रभारी अर्जुनदेव चड्ढा ने बताया कि अंबालवी सेवा संस्थान द्वारा आयोजि शहीदी समागम पर्व के अवसर पर सिक्ख धर्माचार्य ज्ञानी गुरुनाम सिंह तथा ५५०वें प्रकाशोत्सव पर्व के संयोजक बाबा लक्खा सिंह गुरुद्वारा अगमगढ़ साहिब कोटा द्वारा समाजसेवा क्षेत्र में कार्य करने के लिए आर्य समाज के अर्जुनदेव चड्ढा, वेद प्रचार के लिए एडवोकेट चंद्रमोहन कुशवाह, शिक्षा क्षेत्र में डीएवी की प्राचार्या श्रीमती सरिता रंजन गौतम, भारतीय संस्कृति एवं संस्कृत क्षेत्र में आचार्य अग्निमित्र शास्त्री, योग के क्षेत्र में अरविन्द पाण्डेय एवं पर्यावरण शुद्धिकरण के लिए आर.सी.आर्य को स्मृति चिन्ह देकर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर आर्य समाज कोटा द्वारा बाबा लक्खा सिंह को आर्य समाज के संस्थापक महर्षि दयानन्द सरस्वती द्वारा लिखित अमर ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' भेंट किया गया। *(अर्जुनदेव चड्ढा)*

लखनऊ-समाचार

बादलों की आवाजाही और कड़के की ठंड में सम्पन्न

सत्यनारायण वेदप्रचार मंडल का वार्षिक समारोह

सत्यनारायण ट्रस्ट एवं जिला वेदप्रचार संगठन के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित वार्षिक समारोह के समापन सत्र में कवि सम्मेलन की अध्यक्षता करते हुए प्रख्यात आर्यनेता कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य, पूर्व कार्यकारी अध्यक्ष, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा दिल्ली ने धर्म, संस्कृति एवं साहित्य प्रेमियों का आह्वान करते हुए कहा- 'आज राष्ट्र के समक्ष अनेक चुनौतियाँ मुँह बाये खड़ी हैं। आर्यजनों को एकजुट होकर उनका मुकाबला करना होगा जिससे भारत की एकता, अखण्डता और गौरव गरिमा की रक्षा हो सके।' कविसम्मेलन में अन्तर्राष्ट्रीय ख्यातिलब्ध वैदिक कवि सारस्वत मोहन मनीषी की राष्ट्रप्रेम से भरी हुई कविताओं ने उत्साह एवं रोमांचकारी वातावरण का सृजन कर दिया। इसके पूर्व 'आर्य लोक वार्ता' के प्रधान सम्पादक डॉ.वेद प्रकाश आर्य ने 'सन्धान बदलना ही होगा' शीर्षक अपनी ओजपूर्ण कविता प्रस्तुत की।

इसके अलावा आचार्य सत्यप्रकाश आर्य बाराबंकी, दिनेश आर्य पथिक अमृतसर एवं आचार्य विश्वव्रत ने वेदमंत्रों के काव्यानुवाद की रचनाओं का पाठ किया। आर्य जगत के उद्‌भट विद्वान डॉ.ज्वलंत कुमार शास्त्री (पूर्व संस्कृत विभागाध्यक्ष, रणवीर रणंजय महाविद्यालय, अमेठी) ने सामाजिक कुरीतियों के उन्मूलन में आर्य समाज एवं महर्षि दयानन्द के योगदान पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर न्यायमूर्ति श्री रामनगीना सिंह ने वेदों में आये हुए भारत शब्द का विवेचन किया तथा सी.एन.एस.चिकित्सालय की अधीक्षिका श्रीमती प्रभा सचान ने भी विचार अभिव्यक्त किये।

रसूलपुर कायस्थ जानकीपुरम् के विशाल एवं भव्य प्रांगण में आयोजित इस त्रिदिवसीय आयोजन को कड़ाके की ठंड तथा बादलों की आवाजाही के बावजूद कार्यकर्ताओं की श्रद्धा, विश्वास तथा सत्साहस ने सफलता प्रदान की। प्रतिदिन ऋषिलंगर की व्यवस्था चलती रही, जिसमें क्षेत्र की जनता ने सोत्साह भाग लिया तथा लाभ उठाया। कार्यक्रम प्रारंभ होने के दो सप्ताह पूर्व ४ जनवरी को प्रभात फेरी निकाली गई तथा भजनमंडली ने अपने गीतों के गायन से जनता को समारोह हेतु सूचना दी एवं आमंत्रित किया। १२ जनवरी को जानकीपुरम् विस्तार स्थित महर्षि दयानन्द चौराहे से विशाल शोभायात्रा प्रारंभ हुई। लगभग १० किमी लम्बी इस शोभायात्रा का समापन आर्ष गुरुकुलम् परिसर में हुआ। १७ जनवरी को दीप प्रज्ज्वलन, ओम् ध्वजारोहण के अनन्तर १५ विभूतियों को 'संगठन गौरव' की उपाधि से सम्मानित किया गया। इन विभूतियों के नाम हैं- सर्वश्री पाल प्रवीण, डा.भानु प्रकाश आर्य, शिवशंकर वैश्य, चन्द्रभान सिंह, आर.के.शर्मा, आनन्द मनीषी, देवेन्द्र स्वरूप गुप्त, मनमोहन तलवार, सुरेश चन्द्र मिश्र, स्वामी वीरेन्द्र सरस्वती, नरेन्द्र आर्य, महेन्द्र सिंह, सेवक राम, भानु प्रताप सिंह तथा ओमप्रकाश गुप्त।

इस सत्र के मुख्य अतिथि थे कर्मयोगी आनन्द कुमार आर्य। कार्यक्रम की गौरव गरिमा में अभिवृद्धि 'श्रुतिदर्शन' पत्रिका के नवीन अंक के विमोचन द्वारा हुई।

इस संदर्भ में वेद प्रचार मंडल राजाजीपुरम द्वितीय के अध्यक्ष डॉ.भानु प्रकाश आर्य का योगदान सराहनीय रहा। डॉ.भानु प्रकाश आर्य पत्रिका के संरक्षक सदस्य भी हैं।

सम्पूर्ण समारोह का सर्वप्रमुख आकर्षण का केन्द्र १०८ कुण्डीय यज्ञ था; जो कुलपति आचार्य विश्वव्रत शास्त्री के ब्रह्मत्व में भव्यता एवं गरिमा के साथ सम्पन्न हुआ। उत्सव को सफल बनाने में श्री नवीन कुमार सहगल, श्रीमती कविता सहगल, श्रीमती प्रियंका शास्त्री, श्री सर्वमित्र शास्त्री, श्री शिवशंकर लाल वैश्य, भानु प्रताप सिंह चौहान, चन्द्रभान सिंह, संजीव मिश्र इत्यादि सत्य नारायण ट्रस्ट के समर्पित पदाधिकारियों का विशेष योगदान रहा। जन सामान्य की भागीदारी तथा उत्तम प्रबंध कौशल के लिए भी अखिलेश मिश्र की भूमिका विशेष सराही गई।

हरदोई-समाचार

आर्य समाज सण्डीला

लाला गंगाप्रसाद मानव कल्याण समिति एवं इंदिरा गांधी नेत्र चिकित्सालय एवं शोध संस्थान लखनऊ के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर में १५१ मरीजों का पंजीकरण किया गया जिसमें ५५ मोतिया बिन्द के मरीज निःशुल्क आपरेशन हेतु निश्चित किये गये।

समिति के अध्यक्ष डॉ.सत्य प्रकाश आर्य की देखरेख में नगर कल्याण समिति के धर्मशाले में पूर्व निर्धारित कार्यक्रमानुसार आयोजित नेत्र चिकित्सा शिविर का उद्घाटन समाज सेविका श्रीमती तुलसी ने दीप प्रज्ज्वलित करके किया। रोगियों का परीक्षण इंदिरा गांधी नेत्र चिकित्सालय लखनऊके नेत्र विशेषज्ञ चिकित्सक डा.पंकज वर्मा, डा.साहिबा, डा.सरिता, डा,ज्योति, डा.रश्मि एवं गंगा यादव की टीम ने १५१ मरीजों का परीक्षण किया जिसमें ५५ मरीज मोतिया बिन्द के निःशुल्क आपरेशन हेतु चयनित किये गये। शिविर में श्रीमती नीलिमा गुप्ता, श्रीमती विभा गुप्ता, आकाश गुप्ता, श्रीकान्त आर्य, शशिकांत सिंह, भाष्कर पाण्डेय, सिद्धप्रताप मौर्य, विशुन दयाल शुक्ल, राधेश्याम जोशी, राकेश मोहन गुप्ता एवं चमन विश्वकर्मा सहित अनेक समाजसेवी एवं समिति के सदस्य उपस्थित रहे। अगला शिविर इसी स्थान पर १६ फरवरी २०२० को आयोजित किया जायगा। *(डा.सत्य प्रकाश)*

अपनी बात

"दुःख से पीड़ित की सेवा सच्ची ईश्वर पूजा है।" सम्प्रति मैं इसी ईश्वर पूजा में संलग्न हूँ। जीवन की विषम परिस्थितियों में यदि मैं किसी आवश्यक कार्यक्रम में न पहुँचा पाऊँ, तो अन्यथा न लें। 'आर्य लोक वार्ता' का मार्ग त्याग-तप का मार्ग है, सभी इस मार्ग पर नहीं चल सकते। प्रलोभनों, आकर्षणों, वैयक्तिक महत्त्वाकांक्षाओं को ठुकराकर 'न्यातु पथः प्रविचलन्ति पदं न धीराः'- महर्षि दयानन्द सरस्वती जी महाराज का यह ध्येय वाक्य ही मेरा सम्बल है, कविता की भाषा में कहूँ तो वह इस प्रकार है-

मैं मन की बगिया में,,
आग लगाकर निकला हूँ।
आये मेरे साथ जिसे,
पतझारों से हो प्यार।।

यद्यपि बहुत से लोग इस पथ पर नहीं चल सकते, तथापि ऐसे व्यक्ति आज भी मौजूद हैं, जो सत्यमार्ग से पराङ्मुख नहीं हो सकते। ऐसे व्यक्ति महामानव हैं, पूज्य हैं, श्रद्धेय हैं। अस्तु, मेरे सच्चे साथी हैं, सम्पत्ति हैं, शक्ति हैं।

'आर्य लोक वार्ता' के लिए चंदा अथवा शुल्क नहीं लिया जाता है। हम अपने पाठकों से सहयोग/दान प्राप्त करते हैं। 'आर्य लोक वार्ता' स्वाध्याय है, व्यवसाय नहीं- हिन्दी पत्रकारिता का नया अध्याय है। 'आर्य लोक वार्ता' को सहयोग/दान एक धार्मिक अनुष्ठान है- पुण्य है। ऋषि ऋण से उऋण होने का उत्तम मार्ग है। अपनी गुणवत्ता के बलबूते आर्य जगत का २२ वर्षों से निरन्तर प्रकाशमान सर्वथा विज्ञापन रहित एकमात्र पत्र है- 'आर्य लोक वार्ता'।

'आर्य लोक वार्ता' हेतु अपना सहयोग पृष्ठ ८ पर अंकित विवरण के अनुसार जमापर्ची भरकर बैंक ऑफ बड़ौदा की किसी भी शाखा में नकद/चेक द्वारा जमा कर सकते हैं। इसकी सूचना हमें मोबाइल या पत्र द्वारा अवश्य ही दें। इसके अतिरिक्त निम्नांकित स्वाध्याय केन्द्रों पर उनके केन्द्राध्यक्ष/संचालक के पास जमा कर सकते हैं। अधिकृत स्वाध्याय केन्द्रों की यहाँ सूची प्रकाशित की जा रही है-

आर्य लोक वार्ता का गौरवपूर्ण अध्याय

स्वाध्याय केन्द्र तथा केन्द्राध्यक्ष/संचालक तालिका

श्री पाल प्रवीण, योगाश्रम, अलीगंज, **लखनऊ**	(7309820587)
श्री आचार्य आनन्द मनीषी, वेदमंदिर, राजाजीपुरम, **लखनऊ**	(9935391794)
श्री रण सिंह, आर्य समाज, चन्द्रनगर, आलमबाग, **लखनऊ**	(9415956866)
श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्श नगर, **लखनऊ**	(9335240899)
श्री डोरीलाल आर्य, आर्य समाज, इन्दिरा नगर, **लखनऊ**	(9889090411)
श्री बालगोविन्द पालीवाल, आर्य समाज, गोमती नगर, **लखनऊ**	(9792373494)
डॉ. मोहन लाल अग्रवाल, आर्य समाज, लालबाग, **लखनऊ**	(9454711138)
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', आर्य समाज, चौक, नेवाजगंज, **लखनऊ**	(9919790264)
श्री प्रेमचन्द्र शर्मा, बहादुर पुर, **लखनऊ**	(8799521631)
श्री भानु प्रताप सिंह चौहान, जानकीपुरम, **लखनऊ**	(8799521631)
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', आर्य समाज, **सीतापुर**	(9793296829)
श्री पं.नेतराम आर्य, शास्त्री, (ग्रामीण क्षेत्र), **सीतापुर**	(9919747948)
श्री पं.राजकुमार शास्त्री, पारा रमनगरा, **सीतापुर**	(7651905966)
डॉ.सत्य प्रकाश, आर्य समाज, सण्डीला, **हरदोई**	(9450858750)
श्री सुरेश चन्द्र तिवारी, आर्य समाज, गोनी, **हरदोई**	(9452132006)

-प्रधान सम्पादक

लखनऊ-समाचार

'हियरिंग-क्लीनिक' का शुभारम्भ

१४.०१.२०२०। १/८२, विपुल खण्ड, गोमती नगर में श्री रवीन्द्र त्यागी द्वारा कानों की श्रवण शक्ति के क्षीण होने के परिणाम स्वरूप उत्पन्न होने वाली समस्याओं के समाधान हेतु 'हियरिंग क्लीनिक' का शुभारम्भ किया गया। इस अवसर पर मकर संक्रान्ति के पूर्व दिवस पर वैदिक यज्ञ का आयोजन डॉ.वेद प्रकाश आर्य के आचार्यत्व में किया गया। श्री रवीन्द्र त्यागी, श्रीमती सरिता त्यागी एवं उनके सुपुत्र प्रतीक त्यागी ने श्रद्धापूर्वक यजमान आसन ग्रहण किया।

अपनी शुभकामनाओं की वर्षा हेतु योग शिक्षिका श्रीमती मीना दीक्षित एवं मंजूषा श्रीवास्तव इस अवसर पर जहाँ मौजूद थीं, वहीं रवीन्द्र जी के आदरणीय पिता श्री रमेशचन्द्र त्यागी एवं माताजी उपस्थित रहीं। विशेष अतिथि के रूप में श्री गिरिजा दयाल जी अपनी सहधर्मिणी श्रीमती संगीता श्रीवास्तव सहित इस महत्वपूर्ण अवसर के साक्षी बने। बताते चलें- श्री रवीन्द्र त्यागी को नोएडा में इससे पूर्व 'हियरिंग क्लीनिक' के सफलतापूर्वक संचालन का अनुभव प्राप्त है। आर्य लोक वार्ता की शुभकामनाएँ!

नहीं रहे श्री सुरेश चन्द्र सक्सेना

सक्सेना परिवार के प्रमुख श्री सुरेश चन्द्र सक्सेना (८३) का दुःखद निधन दिनांक २०.०१.२०२० को हो गया। १९३७ में इलाहाबाद में जन्मे स्व.सक्सेना ने कानपुर से स्नातकोत्तर की उपधि प्राप्त की, तदुपरान्त गवर्नमेंट कांट्रेक्टर के रूप में सफलतापूर्वक सेवारत रहे। अपनी लगन और ईमानदारी से सफलता के सोपानों को तय करते हुए श्री सक्सेना ने गोमती नगर के विराज खण्ड में अपना आवास बनाना सुनिश्चित किया था। आप अपने पीछे पत्नी के अलावा दो पुत्रों-श्री संदीप सक्सेना तथा श्री विश्वदीप सक्सेना एवं पुत्री शशि सक्सेना को छोड़ गये हैं। इस अवसर पर स्व.सुरेश सक्सेना के अन्य दो भाई-डॉ.दिनेश चन्द्र सक्सेना एवं न्याय मूर्ति (रि.) श्री बृजेश चन्द्र सक्सेना सपरिवार मौजूद थे और नम आँखों से श्रद्धांजलि अर्पित की।

सन् 2020 के आर्य पर्वो की तालिका - आर्य लोक वार्ता का स्नेहोपहार

लोक प्रचलित नववर्ष-२०२०-स्वागतम्

होत्रा (ऋत्विक्) सदस्यों को विशेष धन्यवाद-बधाई-आभार

नया वर्ष दे आपको, सुख समृद्धि वरदान।
योग-यज्ञ से प्राप्त हो- स्वास्थ्य सिद्धि सम्मान।।

आर्य लोक वार्ता को 1500 रु. या इससे अधिक सहयोग प्रदान करने वाले होता (ऋत्विक्) सदस्यों की तालिका- वर्ष 2019

01.01.19 से 31.12.19 तक सहयोग प्राप्ति–तिथि क्रमानुसार

1. कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य, टाण्डा, अम्बेडकरनगर (01.01.19)
2. श्री अरविन्द कुमार यादव, आर्कीटेक्ट, गोमती नगर, लखनऊ (01.01.19)
3. इं श्री जे.पी.अग्रवाल, गायत्री लोक, कनखल, हरिद्वार (01.01.19)
4. श्री पाल प्रवीण, वैदिक सत्सग, योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ (01.01.19)
5. डॉ.मनोरमा तिवारी, अलीगंज, लखनऊ (26.01.19)
6. कर्नल पाल प्रमोद, गंगानगर, मेरठ (26.01.19)
7. श्रीमती मधुर भण्डारी, बसंत कुज, नई दिल्ली (26.01.19)
8. श्रीमती सुधा चौधरी, विनीत खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (12.02.19)
9. श्री कृष्ण स्वरूप चौधरी, विनीत खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (12.02.19)
10. श्री बाल गोविन्द पालीवाल, विवेक खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ (12.02.19)
11. श्री बाँके बिहारी 'हर्ष', अवध मोटर वर्क्स, सिविल लाइन्स, फैजाबाद (10.03.19)
12. रुक्मिणी आर्य, प्रधान, माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर, हरिद्वार (19.03.19)
13. श्री पी.के.श्रीवास्तव, ओमेक्स रेजीडेन्सी, लखनऊ (05.04.19)
14. श्री रण सिह, आर्य समाज, चन्द्रनगर, आलमबाग, लखनऊ (21.04.19)
15. श्री अरुण विरमानी, आर्य समाज, चन्द्र नगर, लखनऊ (19.05.19)
16. श्री आत्म प्रकाश बत्रा, आर्य समाज, आदर्शनगर, आलमबाग, लखनऊ (19.05.19)
17. श्री डोरीलाल आर्य, आर्य समाज, इन्दिरा नगर, लखनऊ (22.06.19)
18. डॉ.गणेशदत्त शर्मा, साहिबाबाद, गाजियाबाद (02.07.19)
19. डॉ. श्रीकर माल्या, मंगलौर, कर्नाटक (03.07.19)
20. श्री सुरेश चन्द्र तिवारी, जानकी पुरम, लखनऊ (12.08.19)
21. श्रीमती रामा आर्य 'रमा', नेवाजगंज, चौक, लखनऊ (15.08.19)
22. श्रीमती कुमुद गुप्ता, बी–1/114, सेक्टर–जी, अलीगंज,, लखनऊ (27.08.19)
23. श्रीमती कमलेश पाल, योगाश्रम, अलीगंज, लखनऊ (13.09.19)
24. आचार्य आनन्द मनीषी, सी–1271, राजाजीपुरम, लखनऊ (02.10.19)
25. श्री प्रदीप कुमार श्रीवास्तव, एडवोकेट, निशात गंज,, लखनऊ (12.10.19)
26. डॉ.भानु प्रकाश आर्य, एल.डी.ए.कालोनी,ष्तालकटोरा, लखनऊ (13.10.19)
27. श्रीमती प्रमोद कुमारी, एम.एस.37, सेक्टर–डी, अलीगंज, लखनऊ (31.12.19)
28. श्री ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, जनरैलगंज, लखनऊ (31.12.19).
29. श्रीमती निमिषा वाजपेयी, लक्ष्मणपुरी, फैजाबाद रोड, लखनऊ (31.12.19)

संस्थापक
माता लीलावती आर्यभिक्षु परोपकारिणी न्यास
ज्वालापुर, हरिद्वार
एवं
'आर्य्य लोक वार्ता' हिन्दी मासिक, लखनऊ

स्वामी आत्मबोध सरस्वती जी महाराज

बाल्यकाल मुगलसराय, फिर यौवन में,
आर्य प्रतिनिधि सभा लखनऊ आ गये।
हिन्दी सत्याग्रह के नेता बने, कारागार-
झेला, फिर आर्यभिक्षु बनकर छा गये।।
वेद के प्रचार हेतु ग्राम ग्राम घूमे, वाणी-
ओज मधुरस द्वारा जन मन भा गये।
आत्मबोध स्वामी संन्यासी आर्य वानप्रस्थ-
ज्वालापुर आश्रम का गौरव बढ़ा गये।।
-डॉ.वेद प्रकाश आर्य

•••

आर्यभिक्षु उपकार न्यास से कर साहित्य प्रकाशन।
'आर्य लोक वार्ता' द्वारा रख आर्यधर्म अनुशासन।।
ऐसी ज्योति जगा दी जगमग आर्यधर्म की फिर से।
नीरस रसा बनी रसवंती वैदिक स्वर निर्झर से।
हे अनुशासन प्रिय! आश्रम मर्यादा में रहकर।
'विश्वमार्यम् कृण्वन्तो' की आर्य ध्वजा कर गहकर।।
हिन्दी अंग्रेजी उर्दू में सत्य अर्थ मुखरित कर।
जनमन में आध्यात्मिकता निर्भयता का स्वर भरकर।।
चले गये तुम अमर लोक का प्रणवाक्षर उच्चारा।
धन्य हुई भारत जननी सच जीवन धन्य तुम्हारा।।
-डॉ.उमाशंकर शुक्ल 'शितिकण्ठ'

•••

आर्य पर्वो की तालिका : विक्रमी सम्वत् 2076-77 तद्नुसार सन् 2020

क्रम सं.	पर्व का नाम	चन्द्र तिथि	अंग्रेजी दिनांक	दिन
१	गुरु गोविन्द सिंह जयन्ती	पौष शुक्ल, सप्तमी, वि.२०७६	०२.०१.२०२०	गुरुवार
२	मकर-संक्रान्ति (खिचड़ी)	माघ कृष्ण, पंचमी, वि.२०७६	१५.०१.२०२०	मंगलवार
३	सुभाष चन्द्र बोस जयन्ती	माघ कृष्ण, चतुर्दशी, वि.२०७६	२३.०१.२०२०	गुरुवार
४	गणतंत्र दिवस	माघ शुक्ल, द्वितीया, वि.२०७६	२६.०१.२०२०	रविवार
५	वसन्त पंचमी	माघ शुक्ल, पंचमी, वि.२०७६	३०.०१.२०२०	सोमवार
६	माघी पूर्णिमा, रविदास जयन्ती	माघ शुक्ल, पूर्णिमा, वि.२०७६	०९.०२.२०२०	रविवार
७	महर्षि दयानन्द सरस्वती जन्मोत्सव	फाल्गुन, कृष्ण, दशमी, वि.२०७६	१८.०२.२०२०	मंगलवार
८	शिवरात्रि (ऋषि-बोधोत्सव)	फाल्गुन, कृष्ण, त्रयोदशी, वि.२०७६	२१.०२.२०२०	शुक्रवार
९	पं.लेखराम वीर तृतीया	फाल्गुन, शुक्ल, तृतीया, वि.२०७६	२६.०२.२०२०	बुधवार
१०	नवशस्येष्टि/ होलिका दहन	फाल्गुन, शुक्ल, पूर्णिमा, वि.२०७६	०९.०३.२०२०	सोमावार
११	आर्य समाज स्थापना दिवस/नवसंवत्सर	चैत्र, शुक्ल, प्रतिपदा, वि.२०७७	२५.०३.२०२०	बुधवार
१२	श्रीराम नवमी	चैत्र, शुक्ल, नवमी, वि.२०७७	०२.०४.२०२०	गुरुवार
१३	पं.गुरुदत्त विद्यार्थी जन्मदिवस	बैशाख, शुक्ल, तृतीया, वि.२०७७	२६.०४.२०२०	रविवार
१४	हरितृतीया (हरियाली तीज)	श्रावण शुक्ल, तृतीया, वि.२०७७	२३.०७.२०२०	गुरुवार
१५	श्रावणी उपाकर्म/ऋषि तर्पण/रक्षाबन्धन	श्रावण, शुक्ल, पूर्णिमा, वि.२०७७	०३.०८.२०२०	सोमवार
१६	श्रीकृष्ण जन्माष्टमी	भाद्रपद, कृष्ण, अष्टमी, वि.२०७७	११.०८.२०२०	मंगलवार
१७	स्वतंत्रता दिवस	भाद्रपद, कृष्ण, एकादशी, वि.२०७७	१५.०८.२०२०	शनिवार
१८	श्राद्ध तर्पण/विश्वकर्मा जयन्ती	आश्विन, कृष्ण, अमावस्या, वि.२०७७	१७.०९.२०२०	गुरुवार
१९	गांधी जयन्ती/लाल बहादुर शास्त्री जयन्ती	आश्विन, कृष्ण, प्रतिपदा, वि.२०७७	०२.१०.२०२०	शुक्रवार
२०	विजयादशमी/दशहरा	आश्विन, शुक्ल, दशमी, वि.२०७७	२५.१०.२०२०	रविवार
२१	दीपावली/ऋषि निर्वाण दिवस/शरदीय नवशस्येष्टि	कार्तिक, कृष्ण, अमावस्या, वि.२०७७	१४.११.२०२०	शनिवार
२२	स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस	मार्गशीर्ष, शुक्ल, नवमी, वि.२०७७	२३.१२.२०२०	बुधवार

नोट : देशी तिथियों में घट-बढ़ होने से पर्व तिथि मे परिवर्तन हो सकता है।

संस्थापक
स्व. स्वामी आत्मबोध सरस्वती

संरक्षक एवं निर्देशक
कर्मयोगी श्री आनन्द कुमार आर्य

प्रधान संपादक
डॉ० वेद प्रकाश आर्य
कार्यालय-638/181डी,
शिवविहार कालोनी, पो.-सीमैप,
पिकनिक स्पाट रोड, लखनऊ-226015
9450500138

संपादक
आलोक वीर आर्य
: 8400038484

प्रसार व्यवस्थापक
अमित वीर त्रिपाठी
: 9651333679

संवाद प्रमुख
गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'
: 9956087585

कार्यालय प्रमुख
श्रीमती सरला आर्य
: 9450500138

विशेष कार्याधिकारी
श्रीमती निमिषा वाजपेयी
: 7310119999

प्रचार प्रमुख
श्री प्रेम चन्द शर्मा

ई-मेल
aryalokvarta@gmail.com

सहयोग राशि

सामान्य सदस्य	–	100 रु. वार्षिक
होता सदस्य	–	1,500 रु. वार्षिक
संरक्षक	–	15,000 रु.
प्रतिष्ठापक	–	50,000 रु.

सहयोग राशि निम्नलिखित बैंक की किसी भी शाखा में 'आर्य्य लोक वार्ता' खाते में जमा कर हमें सूचित कर सकते हैं। विवरण इस प्रकार है–

बैंक–बैंक आफ बड़ौदा, विभव खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ।
IFSC - BARBOVIBHAV
खाता धारक – आर्य लोक वार्ता
खाता सं.–46900 1000 00651
खाते का प्रकार–बचत खाता

प्रतिष्ठापक
श्री अरविन्द कुमार आर्कीटेक्ट, लखनऊ
श्री जे.पी.अग्रवाल, कनखल, हरिद्वार
डॉ. रजत बत्रा, लखनऊ

संरक्षक
डॉ.भानु प्रकाश आर्य, लखनऊ
श्रीमती बलबीर कपूर, लखनऊ
श्रीमती मिनी स्वरूप, नई दिल्ली
श्रीमती मधुर भण्डारी, नई दिल्ली
श्रीमती कमलेश पाल, लखनऊ,
कर्नल पाल प्रमोद, मेरठ
आचार्य आनन्द मनीषी, लखनऊ
पं.ज्ञानेन्द्र दत्त त्रिपाठी, लखनऊ
श्रीमती रामा आर्य 'रमा', लखनऊ
श्री सर्वमित्र शास्त्री, लखनऊ

परामर्श एवं सहयोग
श्री वीरेन्द्र कुमार आर्य 'वीरजी', सीतापुर
डा. सत्य प्रकाश, सण्डीला, हरदोई

सलाहकार
श्री आनन्द चौधरी एडवोकेट, लखनऊ

मुद्रक, स्वामी और प्रकाशक डॉ. वेद प्रकाश आर्य के लिए क्रियेटिव ग्राफिक्स, बी-2, हिमांशु सदन, 5-पार्क रोड, लखनऊ द्वारा मुद्रित तथा 'वेदाधिष्ठान 539क/234 हरीनगर, (रवीन्द्रपल्ली) पो.-इन्दिरानगर, लखनऊ से प्रकाशित।